

# रबड़ समाचार



अंक - 128

अक्तूबर - दिसंबर 2020



## जय हिंदी

जय हिंदी, जय देवनागरी !  
जय कबीर-तुलसी की वाणी,  
मीरा की वाणी कल्याणी ।  
सूरदास के सागर-मन्थन –  
की मणिमंडित सुधा-गागरी ।  
जय हिंदी, जय देवनागरी !

जय रहीम-रसखान-रस-भरी,  
घनानंद-मकरंद-मधुकरी ।  
पद्माकर, मतिराम, देव के -  
प्राणों की मधुमय विहाग री ।  
जय हिंदी, जय देवनागरी ।  
भारतेंदु की विमल चांदनी  
रत्नाकर की रश्मि मादनी ।  
भक्ति स्नान और कर्म-क्षेत्र की,  
भागीरथी भुवन-उजागरी ।  
जय हिंदी, जय देवनागरी

जय संवतंत्र भारत की आशा,  
जय स्वतंत्र भारत की भाषा  
भारत-जननी के मस्तक की-  
श्री-शोभा-कुंकुम-सुहाग री ।  
जय हिंदी, जय देवनागरी !

मगन अवरथी

## रबड़ बोर्ड

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)

कोट्टयम - 686 002, केरल

पी बी नं.1122

दूरभाष : (0481) 2301231

फैक्स : 91 481 2571480

ई मेल : ol@rubberboard.org.in

वेब साइट : www.rubberboard.org.in



## रबड़ समाचार

बुलेटिन

अक्तूबर - दिसंबर 2020

अंक 128

इस अंक में

अध्यक्ष  
डॉ के एन राघवन आई आर एस

संपादक  
जी सुनील कुमार  
सहायक निदेशक (रा भा)

सहायक संपादक  
श्रीविद्या एम  
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों  
से रबड़ बोर्ड का सहमत होना  
आवश्यक नहीं है।  
बिक्री के लिए नहीं केवल आंतरिक  
परिचालन के लिए।

जैसा तुम सोचते हो, वैसे ही बन जाओगे। खुद  
को निर्बल मानोगे तो निर्बल और सबल मानोगे  
तो सबल ही बन जाओगे -

स्वामी विवेकानंद

मुख पृष्ठ : नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापींग  
का नमूना

रबड़ बागानों को टापींग किए बिना नहीं छोड़ें	4
सूखेपन से बचने के लिए	5-9
आधा-पागल - कहानी	10
महात्मा गांधी और स्वच्छता	11-13
बातों बातों में - लघु कथा	14
ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला	15
हिंदी पखवाड़ा समारोह 2020	16-18
अखिल भारतीय निबंध लेखन पुरस्कार वितरण समारोह	19-20
कैसे बनी हिंदी हमारी राजभाषा - क्या है हिंदी दिवस का महत्व	21-22
कामकाजी महिलाओं के लिए शाक वाटिका	23-25
रसोई घर	25
रबड़ बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाएं	26-27
सेवानिवृत्तियाँ	28
कलप्पगोणियम सेरुलियम - रबड़ का अन्य आवरण फसल	29-30
नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापींग द्वारा अधिक आमदनी	31-34
हिंदी दिवस समारोह	35-38
चिकित्सा : शरीर विज्ञान नोबेल पुरस्कार	39





## रबड़ बागानों को टापिंग किए बिना नहीं छोड़ें

रबड़ बाजारों में हाल के दिनों में हुए सकारात्मक परिवर्तन कृषकों में काफी उम्मीदें जागाई हैं। उत्पादन अधिक प्राप्त होने वाले महीनों में ही भाव में वृद्धि हुई है, जो अधिक महत्वपूर्ण है। साथ में हमें इस तथ्य को भी नहीं भूलना चाहिए कि बाजार में उतार-चढ़ाव अप्रत्याशित रूप से जारी है।

मांग-आपूर्ति समीकरणों में अंतर ही हमेशा की तरह भाव में वृद्धि का मुख्य कारण बना है। बाजार से चीन द्वारा रबड़ की अधिक खरीद और दस्तानों के अधिक उपभोग के अनुसार लाटेक्स की मांग में हुई वृद्धि ही मांग क्षेत्र में हुए दो प्रमुख परिवर्तन हैं। भविष्य व्यापार क्षेत्र में सट्टे व्यापार में हुई वृद्धि भी भाव बढ़ने के लिए मदद की है। वर्ष 2019-20 में नकारात्मक वृद्धि दर्ज किए भारतीय वाहन उद्योग क्षेत्र में पिछले महीनों में हुए **जागरण** भी एक और सकारात्मक कारण है। उसी समय बाढ़ और भारी बारिश की वजह से दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र में स्थित प्रमुख रबड़ उत्पादक राष्ट्रों से उत्पादन कम होने से रबड़ के अंतर्राष्ट्रीय बाजार की उपलब्धता प्रभावित हुई है। वियतनाम में हुई बाढ़ और थैयलैंड में हुई भारी बारिश इनमें विशेष रूप से उजागर करने की बातें हैं।

मूल्य वृद्धि का लाभ प्राप्त करने के लिए कृषक स्तर पर उठाया जाने वाला मुख्य कदम अधिकतम उत्पादन प्राप्त करना ही है। यहां स्वाभाविक सवाल उठ सकता है कि उत्पादन बढ़ने से भाव कम हो जाएगा कि नहीं? लेकिन, ऐसा एक सवाल तभी प्रासंगिक हो सकता है जब हमारे घरेलू उपयोग के लिए पर्याप्त रबड़ का उत्पादन यहां कर सकता है। राष्ट्र में अभी भी उपभोग के लिए आवश्यक रबड़ के 30 प्रतिशत से अधिक आयात करने की स्थिति भारत में मौजूद है। उत्पादन बढ़ाकर और आत्मनिर्भर होकर आयात को नियंत्रित करने से ही हम मूल्य स्थिरता सुनिश्चित कर सकते हैं।

हमारे देश में लगभग 24 प्रतिशत बागान गैर टापिंग किए पड़े हैं, इस तथ्य को भी इसके साथ जोड़के पढ़ना है। टापों की कमी, अपर्याप्त टापिंग मजदूरी और बागान मालिक जगह पर न होना आदि सब इसके कारण हैं। गैर फसलन छोड़े बागानों में टापिंग फिर से शुरू करने के लिए बागान दत्तक ग्रहण, वर्षारक्षण का प्रोत्साहन, स्वयं टापिंग और अधिक अंतराल की टापिंग रीतियों का प्रोत्साहन आदि कई गतिविधियां बोर्ड ने अपनाई हैं। बागान दत्तक ग्रहण परियोजना के माध्यम से लगभग 11000 हेक्टेयर बागानों में अब तक टापिंग फिर से शुरू की गयी है। रबड़ उत्पादक संघ और रबड़ बोर्ड के स्वामित्व वाले कंपनियों की सहायता से इस परियोजना को अधिक सक्रिय रूप से आगे ले जाना बोर्ड का उद्देश्य है। विखंडन और कृषि इतर उपयोग कृषि भूमि की उपलब्धता को कम कर रहे इस समय में फसलन किए बिना बागानों को नहीं छोड़ना है। आइए हम एक साथ, उपेक्षित जोतों को फिर से लाभकारी रूप से पुनर्जीवित करने का प्रयास करेंगे।

डॉ के एन राघवन आई आर एस  
कार्यकारी निदेशक

## सूखेपन से बचने के लिए



**डॉ. बेरिन जोर्ज**  
प्रधान वैज्ञानिक  
भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान

**उत्तर-पूर्वी मानसून के बाद तुरंत सूखेपन सख्त होने की एक रीति अब यहां मौजूद है। सूखेपन से बचने हेतु पौधों के लिए आवश्यक संरक्षण देने की आवश्यकता के बारे में लेख में बताया गया है।**

रबड़ कृषक संकटों से गुज़रने वाला एक समय है यह। भाव में गिरावट के साथ ही साथ जलवायु परिवर्तन और उसके परिणाम और अप्रत्याशित बाढ़ कृषि क्षेत्र को बड़े हद तक नुकसान पहुंचाया है। ढलान वाली जगहों में भूस्खलन आदि की वजह से ऊपरी मिट्टी और मिट्टी की उर्वरता का नष्ट हुआ तथा मिट्टी की स्वाभाविक संरचना पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा जो मिट्टी की जल संग्रहण क्षमता को कम करने का कारण बना। जलवायु परिवर्तन और अन्य स्थलीय घटनाओं के कारण वर्षा की प्राप्यता और स्तर में बहुत कमी का अनुभव होता है। इसके साथ भौगोलिक तापन के फलस्वरूप तापमान में आनेवाली वृद्धि गर्मी और सूखेपन को और अधिक कठोर बना देती है। अंतरिक्ष का तापमान

बढ़ना और मिट्टी की नमी कम होना दूसरे कृषि उपजों की तरह रबड़ की वृद्धि और उत्पादकता को भी प्रभावित करते हैं। चूंकि रबड़ एक बहुवर्षीय फसल है, अगर शुरुआत से ही सावधानी से खेती नहीं की जाती है, तो वह वर्षों तक टिके रहने वाले गंभीर नुकसान का कारण हो सकता है। इसलिए, ज़मीन तैयार करने से लेकर टापींग तक, सावधानी से ज़मीन में नमी बनाए रखकर सूखेपन को नियंत्रित करने के अन्य एहतियाती उपायों को अपनाने के माध्यम से ही लंबे समय तक स्थिर उत्पादन सुनिश्चित किया जा सकता है।

### पौधशालाओं में

गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों का उपयोग किसी भी खेती की तरह रबड़ पेड़ों के स्वस्थ विकास के





लिए ज़रूरी है। स्वस्थ पौधों के उत्पादन में पौधशालाओं में देखभाल बहुत महत्वपूर्ण है। पौधशालाएं खुली जगहों में होने के कारण सूर्य की रोशनी सीधे पडने की वजह से नमी के नुकसान की संभावना अधिक होती है। इसलिए तंबू डालकर पौधशालाओं को आंशिक तौर पर छाया प्रदान करना है और पौधों के थल में पलवार करना चाहिए। क्यारियों में बोने से लेकर, प्रत्येक पौधों में नियमित रूप से सिंचाई करना चाहिए। पर्याप्त मात्रा में पानी न मिलने के कारण कमज़ोर हुए पौधे बाद में बागानों में प्रत्यारोपित करने पर भी ठीक हो जाना मुश्किल है। लेकिन वाणिज्यिक रूप से चलाने वाली पौधशालाओं में कई बार अधिक मात्रा में सिंचाई देखी जाती है। इस प्रकार पानी का दुरुपयोग न करने के लिए खास ध्यान देना चाहिए। पानी का दुरुपयोग जितना हो सके कम करके पौधे के थल या केवल कप गीले होने तक की तरह की सिंचाई प्रणाली (सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली), रबड़ बोर्ड की पौधशालाओं में लागू की है।

#### अपक्व अवधि में

रोपण समय को ऐसे नियत करना चाहिए ताकि पौधों को बारिश का पूरा लाभ मिल सकें। बारिश के मौसम की शुरुआत में ही पौधों का रोपण पूरा करना चाहिए। रोपण के पहले ज़मीन तैयार करते

समय सूखेपन की संभावना पर विचार करके आवश्यक मृदा और जल संरक्षण उपाय अपनाना आवश्यक है। ढलान वाली भूमि में बारिश के मौसम पर अधिकतम पानी एकत्रित रखने में मदद करने की रीति में समोच्च मेढें बनाने और बीच-बीच में बाँधों के निर्माण पर भी ध्यान देना चाहिए। वर्षा जल ज़मीन के अंदर जाने के लिए पानी के गड्ढे बहुत प्रभावी तरीका है। पानी के गड्ढे मिट्टी के कटाव को रोकने और पानी को मिट्टी में बनाए रखने के लिए मदद करते हैं। पृथ्वी की सतह से बहने वाले अतिरिक्त पानी को एकत्रित करके संग्रहित किया जा सकता है। इस प्रयोजन के लिए तालाब, कुएं, बांधें, पॉलिथीन शीट बिछाए गड्ढों का उपयोग किया जा सकता है। नदियों से बहने वाले पानी को बांध बनाकर और खसखस जैसे जैव बाड़ बनाकर संग्रहित किया जा सकता है।

ऐसे रोपण किस्में चुनें जो सूखा सहिष्णु और अधिक उत्पादन क्षमता वाले हों। हाल ही में भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित आरआरआईआई 430 जैसी किस्म आरआरआईआई 105 से अधिक सूखा सहिष्णु हैं। इसी तरह, पॉली बैग या कप में सीधे बीज डालकर बड़्ड करके उगाए गए पौधों को बड़्ड टूट द्वारा उत्पादित पौधों की तुलना में मजबूत जड़ होने की वजह से ऐसे

विकसित पौधे अधिक सूखा रोधी होते हैं।

गर्मी की तीव्रता छोटे पौधों को अधिक प्रभावित करती है। रबड़ के बागानों में सिंचाई नामुमकिन होने पर भी बारिश की कमी, बारिश के मौसम और बारिश आने की रीति में हुई बदलाव आदि के कारण से सूखेपन अधिक महसूस होने वाली जगहों में पौधों के जड़ पकड़ने और गर्मी से बचकर रहने के लिए प्रारंभिक वर्षों में सीमित मात्रा में सिंचाई आवश्यक होती है। इस प्रकार पौधों की जड़ों में सीमित मात्रा में पानी देने के लिए सब सोइल इंजक्टर इस्तेमाल कर सकते हैं।

गर्मी की कठोरता से पौधों और मिट्टी को बचाने के साथ पौधों के विकास को त्वरित करने के लिए सबसे उपयुक्त अनुरक्षण विधि है पलवार करना। छोटे पौधों की जड़ पर कचरा या सूखी घास, कयर गूदा या अन्य जैव अपशिष्ट का उपयोग करके पलवारण बाष्पीकरण द्वारा मिट्टी की नमी का नष्ट होना रोक देता है तथा मृदा क्षरण का नियंत्रण करता है। पलवार करना मिट्टी की जैविकता बढ़ाती है तथा वह मिट्टी की संरचना तथा प्रकृति में सुधार लाकर अधिक जल मिट्टी में गहराई तक जाने के लिए और मिट्टी की नमी बनाए रखने के लिए मदद करता है। खरपतवार नियंत्रण, मिट्टी के सूक्ष्म जीवों के विकास में तेजी

और मिट्टी के तापमान में होने वाली भिन्नता की मात्रा को कम करके जड़ों के विकास में मदद करना आदि पलवार से अन्य लाभ हैं।

आम तौर पर बारिश के मौसम समाप्त होने पर नवंबर महीने से पलवार करना शुरू करता है। लेकिन पहले सूचित किए अनुसार जलवायु परिवर्तन के बाद बारिश का क्रम आदि की भविष्यवाणी करना आसान नहीं होने से पौधों को लगाने के बाद एक बार पलवार करना मिट्टी की नमी बनाए रखने और पौधों की जड़ पकड़ने में मदद करते हैं। विशेषकर कप पौधों को लगाने के बाद इस प्रकार पलवार करने से बारिश की कमी से पौधे जल्दी ही मुरझा जाने से/सूख जाने से बच जाएगा। उसी प्रकार ग्रीष्मकालीन बारिश मिलने के साथ (जनवरी-फरवरी महीनों में) जड़ों को नुकसान पहुंचाए बिना जड़ की मिट्टी को हल्के से हिलाने से वर्षा का पानी अधिक मात्रा में मिट्टी की गहराई में जाने और मिट्टी के छिद्रों को बंद करके बाष्पीकरण के माध्यम से मिट्टी की नमीपन के नुकसान को रोकने में मदद करेगा। अध्ययनों से पता चला है कि इस प्रकार मिट्टी को हिलाने के बाद एक बार फिर पलवार करना पौधों के विकास को और तेज़ बना देगा तथा गर्मी की तीव्रता कम करने में मदद करेगा।







प्रारंभिक वर्षों में अंतराफसलन के रूप में केले की खेती पौधों को छाया प्रदान करेगी और सूखेपन की गंभीरता को कम करेगी। गर्मियों की तीक्ष्णता बढ़ने से, सूरज की रोशनी से मिट्टी का स्वास्थ्य खराब हो जाता है। सीधे वर्षा जल और धूप मिट्टी पर पडना उचित नहीं है। फलियों की श्रेणी का प्यूररिया, म्यूकुणा, कालप्पगोणियम आदि जैसे पौधे आवरण फसलों के रूप में लगाया जाता है, तो ये मिट्टी के लिए एक संरक्षण आवरण के रूप में काम करके बाष्पीकरण द्वारा मिट्टी की नमी के नुकसान को नियंत्रित करने और मिट्टी के क्षरण को रोकने में मदद करता है। ये बारिश के समय बहते पानी की गति को कम कर देगा तथा अधिक जल भूमि के अंदर जाने के लिए मदद भी करेगा। ये पौधे जब बर्बाद हो जाते हैं तब काफी मात्रा में जैवांश मिट्टी में मिल जाएगा तथा मिट्टी की उर्वरता और संरचना में और सुधार आएगा और पानी की संग्रहण क्षमता भी बढ़ जाएगी। यह मिट्टी को छाया प्रदान करता है तथा खरपतवारों को बढ़ने भी नहीं देता है। अंतराफसलन को भी एक हद तक फायदा मिलेगा। अध्ययनों से पता चला है कि रबड़ के साथ अंतराफसलन किए बागानों में गर्मियों में अधिक नमी बनी रहती है। बिना आवरण

फसल और अंतराफसल वाले बागानों में अंतर-पंक्तियों में खरपतवारों को रबड़ के लिए हानिकारक न होने की रीति में उगाने देंगे तो मिट्टी की नमी की कमी कुछ हद तक कम हो जाएगी और पौधे के अपशिष्ट मिट्टी के जैवांश को बढ़ाने से मिट्टी की जल आगीरण क्षमता और जल भंडारण क्षमता बढ़ जाएगी। इनकी उपस्थिति बागान की जैव विविधता को बढ़ा देती है।

बहुत छोटे पौधों को धूप झुलस से बचाने के लिए छाया की आवश्यकता होती है। नारियल के पत्ते, बोरी, कागज, सफेद पॉलिथीन शीट और भूसा आदि का इस्तेमाल करके पौधों को ढांकके रख सकता है।

दूसरे साल से पत्ते आपस में छूकर बागानों में छाया आने तक की अवधि में पौधों के जड़ से लेकर अग्र तक भूरे भागों पर चूने या मिट्टी से सफेदी करना चाहिए। सफेद लेप के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले चूने के लेप में तूतिया डालने की आवश्यकता नहीं। मिट्टी इस्तेमाल करता है तो प्रारंभ में एक या दो पौधों में लगाकर गुणवत्ता सुनिश्चित करना अच्छा होगा। इस तरह बड़-बड़ पौधशालाओं में काटे गए मादा पौधों के खूंटों में और अंकुरों के भूरे रंग के भागों में गर्मियों में चूना लगाना चाहिए।

गर्मियों में आकस्मिक रूप से होने वाले आग से बागानों को सुरक्षित रखने के लिए फ़ायरबेल्ट जैसी सावधानियां बरतनी चाहिए। बागानों के चारों ओर तीन से लेकर पांच मीटर तक चौड़ाई में कचरे और झाड़ियां हटाकर साफ करके फ़ायरबेल्ट या फ़ायरब्रेक बनाना है। यहां गिरने वाले सूखे पत्ते और कचरों को समय-समय पर हटाकर गर्मी का मौसम समाप्त होने तक इसको साफ रखे जाते हैं तो आग लगने की स्थिति में भी आग बागान में फैलने से रोका जा सकता है।

### टापिंग करने वाले बागानों में

टापिंग करने वाले बागानों में छाया होने की वजह से गर्मियों का प्रभाव छोटे पौधों की तुलना में



अपेक्षाकृत कम होगा। गर्मी के मौसम में भी लाभदायक हो तो टापिंग जारी रख सकता है। गर्मियों में सुबह टाप करना सबसे उचित है। क्योंकि उत्पादन ज्यादा मिलेगा। टापिंग करने वाले बागानों में वर्षा के मौसम के पहले पानी के गड्ढे बनाने से बागानों में अधिक नमी बनाए रखने में मदद मिलेगी।

आज हम, मौसम या गर्मी की अवधि के बारे में बिलकुल अप्रत्याशित दौर से गुजर रहे हैं। इसलिए,

वर्षा जल का दुरुपयोग किए बिना ज़मीन के अंदर लेने के लिए और नमी बनाए रखने के लिए आवश्यक देखभाल के तरीकों का समय पर बागानों में प्रबंधन से सूखे की गंभीरता को कम कर सकता है और पैदावार बनाए रख सकता है। इसलिए, ऊपर वर्णित सभी ग्रीष्मकालीन सुरक्षा उपायों को अपनाया जाना चाहिए।

हिंदी अनुवाद: श्रीमती श्रीविद्या एम

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

• टीके कठिन वैज्ञानिक परीक्षण तथा नियामक मानदंडों से गुज़रने के बाद ही उपलब्ध कराए गए हैं।

• भारत के पास हर वर्ष दुनिया का सबसे बड़ा टीकाकरण कार्यक्रम चलाने तथा हर वर्ष लगभग 2.7 करोड़ नवजातों के टीकाकरण का अनुभव है।

• टीकों के समान वितरण पर जोर दिया जाएगा, इसी कारण जनसंख्या में प्राथमिकता समूह बनाए गए हैं।

• प्राथमिकता समूह (स्वास्थ्य कर्मी तथा फ्रंटलाइन वर्कर्स, 50 वर्ष से अधिक उम्र के लोग, पहले से बीमार व्यक्ति) को पहले कवर किया जाएगा।

• ये सुरक्षित तथा प्रतिरक्षात्मक वैक्सिन हैं, इन्हें वैज्ञानिक अनुसंधान तथा परीक्षणों के बाद विकसित किया गया है।

• वैक्सिन कोरोनावायरस के खिलाफ इम्यूनिटी प्रदान करेंगे तथा कोरोना संक्रमण के जोखिम को कम करेंगे।

• यह इंजेक्टेबल वैक्सिन है और सभी टीका लगाने वाले स्वास्थ्य कर्मियों को वैक्सिन सेफ्टी प्रॉटोकॉल के तहत प्रशिक्षित किया गया है।

• टीकाकरण जीवन बचाता है, इम्यूनिटी प्रदान करता है और हमें तथा हमारे समुदायों को बीमारियों से बचाता है।

• स्वयं को, अपने परिवार को, दोस्तों और कम्यूनिटी को संक्रमण से बचाने के लिए टीकाकरण आवश्यक है।

• हालांकि यह सच है कि टीकों को बेबद कम समय में विकसित किया गया है लेकिन इनके विकास में सभी आवश्यक प्रॉटोकॉल का पालन किया गया है।

• इन टीकों की सुरक्षा और प्रभावकारिता का पर्याप्त परीक्षण किया गया है तथा सभी आवश्यक जांचों की पुष्टि के बाद ही नियामक स्वीकृति दी गई है।

• टीका लगाने के दौरान टीकाकरण केंद्रों तथा टीकाकरण स्थलों पर सभी सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन किया जाएगा।

• सभी टीका लगानेवालों को टीका सुरक्षा प्रॉटोकॉल में पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित किया गया है।

• टीकाकरण के बाद सभी को कोरोना उपयुक्त व्यवहार का पालन करने की आवश्यकता है।



एक दिन एक विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक पत्र मिला कि उनके विद्यालय में अगले सोमवार को जिला शिक्षा अधिकारी निरीक्षण के लिए आएंगे। प्रधानाचार्य ने सभी शिक्षकों और छात्र-छात्राओं को इस बात से अवगत कराया तथा सावधानी बरतने का भी निदेश दिया ताकि कोई कमी रह न जाए जो जिला शिक्षा अधिकारी की नज़र में आए।

ठीक समय पर शिक्षा अधिकारी आ गए और किसी से कुछ कहे सुने बिना सीधे एक कक्षा में घुस गए। वह पांचवीं कक्षा थी। उनके पीछे-पीछे प्रधानाचार्य और विद्यालय

के कुछ सहयोगी अध्यापक भी कक्षा में दाखिल हो गए। आगंतुकों को देखकर बच्चे अपने-अपने स्थान पर खड़े हो गए और शिक्षा अधिकारी के इशारे पर अपने-अपने स्थान पर बैठ गए। अधिकारी ने बच्चों

पर एक नज़र घुराकर अपना प्रश्न शुरू किया और पूछा, ढबच्चों, क्या कोई बता सकता है, अगर बाज़ार में आलू की कीमत 10 रुपए प्रति किलोग्राम है तो मेरी उम्र कितनी होगी? ढ प्रश्न सुनकर बच्चों के साथ-साथ सभी अध्यापक और प्रधानाचार्य को भी चक्कर आ गए। यह क्या अजब प्रश्न है? बाजार में आलू के भाव और प्रश्नकर्ता की उम्र का क्या संबंध होगा? बच्चे सन्न रह गए और पूरी कक्षा में सन्नाटा छा गया। सभी सोच रहे थे ये कहाँ का पागल है?

मगर उस सन्नाटे को छेदकर एक बच्चा अपना हाथ उठाया और प्रधानाचार्य भ्रमित था क्योंकि वह छात्र बहुत मूर्ख था। गणित में सबसे पीछे रहता था। अधिकारी ने उस छात्र को उत्तर बताने को कहा। उन्होंने बोला - ढसर आपकी उम्र है - 40

साल। ढ शिक्षा अधिकारी बहुत खुश हुए और उस छात्र की प्रशंसा करते हुए कहा कि ढमें कई स्कूलों में निरीक्षण के लिए जाता हूँ, और उन सभी स्कूलों में यही प्रश्न पूछा था, किसी भी छात्र उत्तर नहीं दे सका। मगर तुमने तो बिलकुल सही उत्तर दिया। मेरी उम्र चालीस साल है। इस स्कूल के प्रधानाचार्य के साथ सभी अध्यापकों को प्रशंसा



माधव महांकुड

स्टाफ कार चालक  
रबड़ प्रशिक्षण संस्थान

पत्र देने के लिए मैं सिफारिश करूंगा। आप लोगों का शिक्षा दान सराहनीय है। मैं यहां आकर बहुत प्रसन्न हुआ और मैं सब को अपना साधुवाद अर्पित करता हूँ। ढ

जिला शिक्षा

अधिकारी अपनी खुशी जाहिर करते हुए वापस चले गए। प्रधानाचार्य और सभी अध्यापक आश्चर्य प्रकट करते हुए उस बच्चे के पास पहुँच गए। उस बच्चे के क्लास टीचर ने पूछा, अरे तुम तो यह बता तुम्हें कैसे पता चला कि शिक्षा अधिकारी की उम्र चालीस साल है? और आलू के दाम के साथ अधिकारी की उम्र का क्या संबंध है?

बच्चे ने संकोचते हुए डर के साथ बोला, सर हमारे गांव में एक आधा पागल रहता है जिसकी उम्र 20 साल है और हमारे शिक्षा अधिकारी तो पूरा पागल लगते हैं। इसलिए उनका आयु 20 का डबल 40 होना चाहिए और इसलिए मैं ने उनका 40 साल कह दिया। सब के सब एक बार फिर सन्न रह गए और पूरी कक्षा में सन्नाटा छा गया।





## महात्मा गांधी और स्वच्छता



**ब्रजेश कुमार मेहरा**  
वैज्ञानिक सहायक  
प्रा. अनुसंधान स्टेशन, अगर्तला

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर रबड़ बोर्ड में आयोजित  
अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त निबंध

**प्रस्तावना** - भारत देश किसी जमाने में सोने की चिड़िया कहा जाता था और अपनी संस्कृति के लिए जाना जाता था। लेकिन समय के बदलाव के चलते हमारे देश पर कई बाहरी ताकतों ने राज किया जिससे हमारे देश की हालत खराब हो गई और देश की स्वच्छता पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। हमारे देश का कोई भी बड़ा राज्य, शहर, गांव या फिर मोहल्ला हो वहां पर भी कूटा करकट मिलेगा। हमारे देश के विकास में बाधा पहुंचाने वाली समस्याओं में एक मुख्य कारण गंदगी है। गंदगी का प्रमुख कारण फैक्टरियों का अपशिष्ट कूड़ा करकट, गंदेनाल और घरेलू अपशिष्ट जो सडकों पर इतनी ज्यादा मात्रा में पाया जाता है सडक दिखाई नहीं देती है और केवल दिखाई देता है तो सिर्फ करकट।

**स्वच्छ भारत अभियान का परिचय** - स्वच्छ भारत अभियान का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने महात्मा गांधीजी की 145 वीं जयंती पर 2 अक्टूबर 2014 को किया। उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए उन्हें स्वच्छ भारत अभियान में भाग लेने और इसे सफल बनाने को कहा। गांधीजी का सपना था कि हमारा देश भी विदेशों की तरह पूर्ण स्वस्थ और स्वच्छ दिखाई

दें। नरेंद्र मोदी ने कहा 'देश की सफाई एकमात्र सफाई कर्मियों की जिम्मेदारी नहीं है। क्या इसमें देश के नागरिकों की कोई भूमिका नहीं है, हमें इस मानसिकता को बदलना होगा।' उन्होंने स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए दिल्ली के वाल्मीकी बस्ती में सडकों पर झाड़ू लगाई। जिससे देश के लोगों में जागरूकता लाई जा सके कि जब एक प्रधानमंत्री झाड़ू लगा सकता है तो हम क्यों नहीं।

**स्वच्छ भारत से जुड़ा गांधीजी का सपना** - महात्मा गांधीजी ने भारत को एक निर्मल एवं स्वच्छ देश बनाने का सपना देखा था। उन्होंने कहा था कि स्वच्छता ही स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवन का एक अनिवार्य भाग है।

**स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य** - स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है। इस उद्देश्य को पाने के लिए प्रधानमंत्रीजी ने 5 साल की योजना की घोषणा की जिसके लक्ष्य निम्नानुसार हैं -

1. प्रथम उद्देश्य है देश का कोना-कोना साफ-सुथरा हो।
2. लोगों को बाहर खुले में शौच करने से रोकना जाए।



3. भारत के हर शहर और ग्रामीण इलाकों के घर में शौचालय का निर्माण करवाया जाए।
4. हर गली में कम से कम एक कचरा पात्र लगाए जाए।
5. लगभग 11 करोड़ 11 लाख व्यक्तिगत, सामूहिक शौचालय का निर्माण करवाया जाए।
6. सभी में स्वच्छता के प्रति जागरूकता पैदा करना

**स्वच्छ भारत अभियान की आवश्यकता** - हमारे भारत को स्वच्छ बनाने की आवश्यकता क्यों है उसके प्रमुख कारण निम्न हैं-

1. हमारे देश के हर शहर, हर गांव और हर एक गली में कूड़े करकट व गंदगी से भरी पडी है।
2. देश के गांवों में शौचालय नहीं होने के कारण लोग आज भी खुले में शौच करते जाते है।
3. हमारे आस पास के सभी नालों में भी कचरा रहता है। जिनमें पानी की जगह कचरा बहता है।
4. इस कचरे के कारण हमारे साथ-साथ जीव-जंतु को नुकसान होता है। साथ ही पृथ्वी भी प्रदूषित होती है।



**देश के स्वच्छ न होने के कारण** - हमारे देश का स्वच्छ न होने के कारणों में सबसे पहला कारण आप और हम लोग हैं। क्योंकि गंदगी मनुष्य जाति द्वारा ही फैलाई जाती है। कूड़ा करकट हम फेंकते हैं और दूसरों पर इल्जाम लगाते है। इसके अलावा और भी कई कारण हैं। जैसे - शिक्षा का अभाव, खराब मानसिकता, घरों में शौचालय नहीं होना, अत्यधिक जनसंख्या, सार्वजनिक शौचालय का अभाव, कचरे के सही निस्तारण का अभाव, उद्योगों का अपशिष्ट पदार्थ आदि।

**देश को स्वच्छ रखने के उपाय** - हमारे देश को साफ और स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी हमें स्वयं,

सभी को लेनी होगी। जब तक खुद लोग जागरूक नहीं होंगे तब तक देश की सफाई करना नामुमकिन होगा। फिर भी हमें निम्नानुसार प्रयास करना चाहिए -

1. हर घर में शौचालय बनवाए जाए।
2. हर शहर, हर गांव में सार्वजनिक स्थलों पर शौचालयों का निर्माण करवाना चाहिए।
3. लोगों में साफ सफाई के प्रति जागरूकता फैलाना।
4. जगह-जगह पर कचरा पात्रों का निर्माण करना।
5. साफ-सफाई के प्रति लोगों की मानसिकता को प्रोत्साहित करना व गांव-गांव में पहुँचाना।
6. शिक्षा के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना।

**स्वच्छ भारत अभियान में शामिल मंत्रालय** - गांवों व शहरी विकास के लिए विभिन्न मंत्रालय शामिल किए गए, जो समय-समय पर इस कार्य, योजना की निगरानी रखते है और कार्य

करते हैं। जैसे -

1. शहरी विकास मंत्रालय
2. ग्रामीण विकास मंत्रालय
3. गैर सरकारी संगठन
4. पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय
5. राज्य सरकार आदि।

**स्वच्छ भारत अभियान के लिए चुने गए प्रभावी व्यक्ति** - इस अभियान को चलाने, जारी रखने व लोगों में इसके प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए सरकार ने कई नामचीन हस्तियों, प्रभावी व्यक्तियों को चुना। जिनका काम अपने-अपने क्षेत्र में लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना है। उनमें प्रमुख हैं - सचिन तेंदुलकर, महेंद्र सिंह धोनी, बाबा रामदेव, तारक मेहता का उल्टा चश्मा की टीम, मृदुला सिन्हा, सलमान खान, शशी थरूर आदि।

स्वच्छ भारत अभियान आज हर गांव, शहरी इलाके, कार्यालयों, स्कूलों, उद्योगों में चलाया जा रहा है जिसका मुख्य उद्देश्य अपने आसपास की सफाई करना है।

**स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय** - इसके अंतर्गत विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की गतिविधियां की गईं।

1. स्कूल के कक्षाओं के दौरान प्रतिदिन बच्चों से साफ-सफाई और स्वच्छता के बारे में विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा करना।
2. प्रयोगशाला और पुस्तकालयों आदि की सफाई करना।
3. शौचालयों और पीने के पानी वाले क्षेत्रों की सफाई करना।
4. खेल के मैदान की सफाई करना।
5. स्कूल भवनों का वार्षिक रखरखाव , रंगाई एवं पुताई।
6. स्कूल के बगीचों की साफ-सफाई एवं रखरखाव।
7. निबंध, वाद विवाद, चित्रकला, सफाई और



- स्वच्छता पर प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।
8. सभी बच्चों को साफ सुथरी पोशाक पहनने को प्रेरित करना।
  9. स्वच्छता के प्रति वाद-विवाद और नाटकों की प्रतियोगिता आयोजित करना आदि।

**उपसंहार** - महात्मागांधी ने कहा था कि 'जो परिवर्तन आप दुनिया में देखना चाहते हैं, वह सबसे पहले अपने आप में लागू करें।' महात्मागांधी के ये शब्द स्वच्छता पर आधारित हैं। उनके अनुसार स्वच्छता के जागरूकता की मशाल सभी में पैदा होनी चाहिए। स्वच्छता से हमारा तन और मन दोनों साफ होते हैं और जहां मन साफ होता है वहां ईश्वर निवास करते हैं, ऐसा हमारे बड़े बुजुर्ग कहते हैं। तो आओ, हम सब मिलकर आज यह प्रण करते हैं कि हम इस अभियान को जारी रखेंगे जब तक हमारा भारत पूर्ण स्वच्छ न बन जाए।



चुटकुले



अध्यापक:- तुम बड़े होकर क्या करोगे?

छात्र:- शादी,

अध्यापक:- नहीं, मेरा मतलब है क्या बनोगे?

छात्र:- दुल्हा,

अध्यापक:- ओह.. तुम बड़े होकर क्या हासिल करोगे?

छात्र:- दुल्हन,

अध्यापक:- अबे... मतलब बड़े होकर मम्मी-पापा के लिए क्या करोगे?

छात्र:- बहूँ लाऊंगा!



सब्जी वाला काफी देर से सब्जियों पर पानी छिड़क रहा था। ग्राहक बोला, भैया भिंडी को होश आ गया तो एक किलो दे दे....।।।।

## बातों बातों में

लघु कथा



एम मंजुला

कनिष्ठ सहायक ग्रेड I  
रबड़ बोर्ड मुख्यालय

कोविड-19 महामारी ने विश्व भर के लोगों के जीवन शैली में कई बदलाव लाये हैं। भू-भौतिकीय परिवर्तनों के अनुसार खान-पान, वेश-भूषा आदि में अंतर हैं, लेकिन यह कोरोना ने तो दुनिया में एकरूपता इस प्रकार लायी है, सब लोगों को मास्क रूपी मुखौटे को पहनने को विवश कर दिया गया।

यह सोच बैठी तो .. अचानक किसी की बातें कान में गूंज उठीं। ध्यान देने पर मालूम हुआ कि होंठ बात कर रहा है।



होंठ बोला - ढेखिए कैसी हालत हो गई है अपनी। अपने कोई सिंगार भी नहीं है। सिंगार करते समय मुझ पर महंगी लिपस्टिक डाल देती थी। अब तो..... ö

नाक ने उसे बात पूरी नहीं करने दी। बोलने लगा.....



नाक बोला - ढमुझ पर देखो, हीरे-सोने के नथ डाला जाता था.. अब तो नथ का सवाल ही नहीं उठता, यही नहीं तुम्हारी तरह मैं भी मास्क के अंदर हूँ ....ö



कान बोला - ढअरे आप के मास्क का वजन तो मुझ पर है, पहले तो ऐनक का वजन था, अब दुगुना हो गया है, और

थक जाता हूँ, दर्द के कारण.....ö



आंख बोला - ढआप सब अपने कर्तव्य ठीक से करते हैं न ? मैं तो वह भी न कर पाता हूँ। ऐनक के साथ मास्क भी डाल देते तो ... देखना भी बहुत मुश्किल हो जाता है.....ö



यह सब सुनकर हाथ बोलने लगा। हाथ बोला - मैं अपने हाथों से आप सब को प्यार से छूता था, अब तो मुझे भी बांध दिया गया है.... और सानिटाइसर डालते ही रहते है...

मुझे लगा कि ये तो ठीक कह रहे हैं, मानव राशि में औपचारिक जीवन शैली पर बदलाव होता है, परंतु यह धीरे धीरे होता है। मनुष्य की जीवन शैली बीसवीं और ग्यारहवीं सदी पर देखें तो बहुत बड़ा अंतर है। लेकिन कोराना ने तो कई क्षेत्र में बदलाव बहुत जल्द लाया है। मैं ने कोरोना से बात की - मैं ने बोला.....

ढवैरस तो है आवारा

बनता जीवन दुष्कर

हम मिलकर भगाएंगे

तुम्हें, दुनिया से... वैरस।ö



मैं ऐसे धर्म को मानता हूँ जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा सिखाता है.....

डॉ भीमराव अम्बेदकर



## ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला

बोर्ड के मुख्यालय व अधीनस्थ कार्यालयों के पदधारियों के लिए 15.09.2020 को एक अर्ध दिवसीय हिंदी कार्यशाला सिसको वेबेक्स ऑनलाइन प्लेटफॉर्म द्वारा आयोजित की। कार्यशाला का



उद्घाटन डॉ के एन राघवन आई आर एस, अध्यक्ष एवं कार्यकारी निदेशक ने किया। हर वर्ष बोर्ड के अधीनस्थ कार्यालयों में एक दिवसीय कार्यशालाएं



आयोजित की जाती थीं। लेकिन वर्तमान कोविड-19 महामारी की स्थिति में व्यावहारिक कठिनाइयों की वजह से ऑनलाइन रूप में कार्यशाला आयोजित की गई। जिसमें मुख्यालय से 8 पदधारी भाग लिए।

बोर्ड के 14 अधीनस्थ कार्यालयों से 31 पदधारी कार्यशाला में भाग लिए। कार्यशाला में राजभाषा नीति संबंधी विषय पर कक्षा ली। इसके अलावा बोलचाल की हिंदी भी कार्यशाला का एक विषय था।



इसके अलावा दिनांक 28.09.2020 को बोर्ड के मुख्यालय एवं रबड़ अनुसंधान संस्थान के पदधारियों के लिए एक अर्ध दिवसीय ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में राजभाषा नियम एवं इसकी व्यावहारिक पहलू पर कक्षा ली। श्री जी सुनीलकुमार, सहायक निदेशक (रा भा) ने कक्षा संभाली।



## हिंदी पखवाड़ा समारोह 2020

रबड़ बोर्ड मुख्यालय में वर्ष 2020 के हिंदी पखवाड़ा समारोह का उद्घाटन डॉ के एन राघवन आई आर एस ने किया। कोविड 19 महामारी की वजह से सरकार के कोविड प्रोटोकॉल के अनुसार समारोह का उद्घाटन किया गया। बोर्ड के मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और रबड़ प्रशिक्षण

150 पदधारी भाग लिये। प्रतियोगिताओं के निर्णायक के रूप में बोर्ड से बाहर के हिंदी से जुड़े विशेषज्ञ व्यक्तियों को आमंत्रित किया। प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त पदधारियों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कारों का वितरण राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर किया जाएगा। हिंदी पखवाड़ा समारोह के सिलसिले में,



संस्थान में 14 सितंबर 2020 से 28 सितंबर 2020 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया। इस सिलसिले में मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 09 प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। अधिकतर प्रतियोगिताएं ऑनलाइन रूप में आयोजित की गईं। बाकी प्रतियोगिताएं प्रतिभागियों और निर्णायकों की उपस्थिति में चलाई गईं। प्रोटोकॉल के अनुसार अधिक से अधिक प्रतिभागियों को इनमें शामिल कराने का भी प्रयास किया गया। इस वर्ष की प्रतियोगिताओं में करीब

रबड़ बोर्ड मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के कर्मचारियों के लिए चलाई गयी विविध प्रतियोगिताओं के परिणाम नीचे दिए जाते हैं:

### 1. भाषण (महिला)

श्री/श्रीमती

प्रथम : रमा जी नायर, क. सहा.ग्रेड I, स्था. अनुभाग

द्वितीय : एम मंजुला, क. सहा.ग्रेड I, वि व ले प्रभाग

तृतीय : सी ई जयश्री, प्र. शाला सहायक, केंकापप्र

### भाषण (पुरुष)

प्रथम : माधव महांकुड, स्टा कार चालक ग्रेड I, र प्र सं



द्वितीय : टोणी साबु पोल, क स ग्रेड I, सत. अनुभाग  
तृतीय : बाबुराज ई जी, उ शु निरीक्षक, उ शु प्रभाग

## 2. हस्तलिपि

प्रथम : तृप्ति सी एल, सांख्यि. निरीक्षक, सां एवं यो प्र  
पुष्पकुमारी आर, लेखा अधिकारी, वि व ले प्र  
सुजा क्रिस्टफर, क.स. ग्रेड I, से.मा. प्रभाग



द्वितीय: रतीदेवी सी जी, क.सहा.ग्रेड I, प्र व ज सं.  
बीना वी, सहायक, र प्रशिक्षण संस्थान  
मिनि रविचंद्रन, क.स. ग्रेड I, वि व लेखा प्र  
श्रीबिंदु आर एस, वैज्ञा.सहायक, भारअसं  
तृतीय: सुनिता जी नाइक, क.सहा.ग्रेड I, अनु प्र  
शिवरामन पी आर, स.वि.अधिकारी, प्रवजसं प्र  
सौमिनी एम एस, क. सहा. ग्रेड I, से.मा. प्र  
षैलजा एम, सहायक, वि व लेखा प्रभाग  
ललिता एम जी, सहायक, वि व लेखा प्र  
विशेष : सुनी योयाक, क.सहा.ग्रेड I, रा.आ.प्रभाग  
जयश्री टी, वैज्ञानिक सहायक, र प्र संस्थान  
चित्रा एस, परिचर, स्थापना अनुभाग  
स्मिता सी जी, परिचर, स्थापना अनुभाग  
अजिता ए एस, व.लाइब्रेरियन, भा.र.अ.संस्थान  
षिन्टो मात्यु, बैरा, कैंटीन, भारअसं  
जोषी पी जे, फार्म सहायक, र प्र संस्थान

## 3. प्रश्नोत्तरी

प्रथम : रमा जी नायर, निषिता पी, एस एस बिंदु  
द्वितीय: सोली जे ऑस्टिन, मनोज एम, सती के बी  
तृतीय: बाबुराज ई जी, वर्गीस पी ए, एस मल्लिकाम्मा  
विशेष: आन्टणी के ए, धन्या आर नायर,  
मूर्षाद बीगम यू

## 4. टिप्पण एवं आलेखन

प्रथम : मूर्षाद बीगम यू, सहायक, रा आ प्रभाग  
द्वितीय: एस मल्लिकाम्मा, सहायक, उ शु प्रभाग  
तृतीय: बाबुराज ई जी, उ शु निरीक्षक, उ शु प्रभाग  
माधव महांकुड, स्टा.का.चालक ग्रेड I, र प्र संस्थान

## 5. निबंध लेखन

प्रथम: आर पुष्पकुमारी, ले.अधिकारी, वि एवं ले प्रभाग  
स्वप्ना कुमारी ए, क.स.ग्रेड I, स्थापना  
द्वितीय: निषिता पी, क.स ग्रेड I, अनुसंधान कार्यालय  
सी ई जयश्री, प्रयोगशाला सहायक,केंकाप्र  
एस एस बिन्दु, क.स ग्रेड I, अनु.लेखा  
तृतीय: सुनी योयाक, क सहायक ग्रेड I, रा आ प्रभाग  
एस मल्लिकाम्मा, सहायक, उत्पाद शुल्क प्रभाग  
माधव महांकुड, स्टा.का.चालक ग्रेड I, र प्र संस्थान

## 6. टंकण

प्रथम: नागलक्ष्मी अम्माल आर, अ.अधिकारी, स्थापना  
द्वितीय: जिजी पी जोण, आशु.ग्रेड I, स्थापना अनुभाग  
तृतीय: स्वप्ना कुमारी ए, क स ग्रेड I, स्थापना अनुभाग  
विशेष : माया सी पी, क सहायक, उ शु अनुभाग

## 7. कवितालापन (महिला)

प्रथम: शोभा ए.एन, क.सहायक ग्रेड I, का.नि. का कार्यालय  
सी ई जयश्री, प्रयोगशाला सहायक, केंकाप्र  
द्वितीय: षेली जेकब, क.वैज्ञा. अधिकारी, कृषि वि.प्रभाग  
मूर्षाद बीगम यू, क.स.ग्रेड I, रा आ प्रभाग  
तृतीय: निषिता पी, क.स ग्रेड I, अनुसंधान कार्यालय  
सती के बी, लेखा अधिकारी, वित्त व लेखा विभाग  
जाक्लिन डिक्रूज़, क.सहायक ग्रेड I, वित्त व लेखा  
विशेष : इंदिरा वास्स्यार वी के, क.स.ग्रेड I, इं व सं प्रभाग

## कवितालापन (पुरुष)

प्रथम : माधव महांकुड, स्टा.का.चालक ग्रे I, र प्र संस्थान  
द्वितीय: एस एन भट्ट, सहा.निदेशक, वि व लेखा प्रभाग  
तृतीय: बाबुराज ई जी, उ शुल्क निरीक्षक, उ शु प्रभाग  
सच्चिदानंद कबि, स्टा.का.चालक, का.नि.का कार्यालय



### 8. हिन्दी गीत (महिला)

प्रथम : निषिता पी, क.स ग्रेड I, अनुसंधान कार्यालय

द्वितीय: सुनिता मत्ताई, क.सहा.ग्रेड I, सां व यो विभाग

तृतीय : सी ई जयश्री, प्रयोगशाला सहायक, केंकापप्र

मूर्षाद बीगम यू, क.स.ग्रेड I, रा आ प्रभाग

### हिन्दी गीत (पुरुष)

प्रथम : टी आर अनिलकुमार, मेकानिक, केंकाप प्र. शाला



द्वितीय: एस एन भट्ट, सहा.निदेशक, वि व लेखा प्रभाग

एस सुरेश, परिचर, वित्त एवं लेखा प्रभाग

तृतीय: सच्चिदानंद कबि, स्टा.क्र.चालक, क्र. नि क्र कार्यालय

### 9. समाचार वाचन (महिला)

प्रथम : निषिता पी, क.स.ग्रेड I, अनुसंधान कार्यालय

द्वितीय: रमा जी नायर, क.सहा.ग्रेड I, स्थापना अनुभाग

तृतीय: सी ई जयश्री, प्रयोगशाला सहायक, केंकापप्र

निषा ए पिल्लै, क.सहा.ग्रेड I, सां एवं यो प्रभाग

### समाचार वाचन (पुरुष)

प्रथम : टोणी साबु पोल, क स ग्रेड I, सतर्कता अनुभाग

द्वितीय: बाबुराज ई जी, उ शुल्क निरीक्षक, उ शु प्रभाग

तृतीय: माधव महांकुड, स्टा.का.चालक ग्रे I, र प्र संस्थान

वर्गीस पी ए, स.निदेशक (उशु), उ.शुल्क प्रभाग



### रबड़ के रोग नियंत्रण के लिए “वाट्सआप”

रबड़ पौधों को प्रभावित करने वाले रोग और कीटों के बारे में और उनके लिए उपचार के बारे में जानने के लिए वाट्सआप द्वारा संपर्क कर सकते हैं। रबड़ को होने वाले सभी रोग-कीटों को सही समय पर पहचानने के लिए और उपचार जानकर बागानों में प्रयोग करने के लिए यह सुविधा उपयोगी होगी। यदि कृषक रबड़ के पेड़ों को प्रभावित करने वाले कीटों की पहचान करने में सक्षम नहीं हैं तो, अपने मोबाइल में चित्र सहित रोग के विवरण वाट्सआप (नंबर 9496333117) के माध्यम से भेजने पर अनुसंधान संस्थान के विशेषज्ञ समस्या की पहचान करेंगे और उपचार का सुझाव देंगे।

इसके अलावा रोग कीटों को पहचानने के लिए रबड़ अनुसंधान संस्थान के रबड़ क्लिनिक की सुविधा का भी कृषक द्वारा उपयोग किया जा सकता है। <http://clinic.rubberboard.org.in> नामक वेबसाइट के माध्यम से आपस में विचार के आदान प्रदान करने के लिए उपयोगी तरीका में क्लिनिक कार्यरत है। रबड़ बोर्ड कॉल सेंटर नंबर 0481 - 2576622 में (सभी कार्यदिनों पर पूर्वाह्न 9.30 बजे से अपराह्न 5.30 बजे तक) बुलाने पर रोग नियंत्रण के लिए आवश्यक सुझाव मिलेंगे।

## अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता - पुरस्कार वितरण समारोह

जनवरी 2020 के दौरान **युगपुरुष महात्मा गांधी** विषय पर रबड़ बोर्ड के पदधारियों के लिए आयोजित अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता के पुरस्कारों का वितरण **महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती समारोह** के समापन समारोह की पूर्व संध्या पर 01 अक्टूबर 2020 को अपराह्न 3.00 बजे मुख्यालय में किया गया। डॉ के एन राघवन, आई आर एस, अध्यक्ष एवं कार्यकारी निदेशक ने प्रमाणपत्रों का वितरण किया। कॉविड-19 महामारी के कारण केवल मुख्यालय और मुख्यालय के निकटस्थ कार्यालयों से विजेता पदधारी समारोह में उपस्थित थे। पुरस्कार प्राप्त विजेताओं के नाम निम्नानुसार है -

### हिंदीतर भाषी प्रथम पुरस्कार

श्री सुनिल कुमार पी आर,  
सहायक, प्रादेशिक कार्यालय  
ईराट्टुपेट्टा



### द्वितीय पुरस्कार



श्रीमती चंद्रलेखा के, क्षेत्रीय अधिकारी, प्रादेशिक  
कार्यालय कासरगोड

### तृतीय पुरस्कार

श्री बिद्युत गोगोई,  
रबड़ टारपिंग निदर्शक,  
प्रा का गुआहाटी



### चौथा पुरस्कार



1. श्रीमती सिनी जे, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I,  
प्रादेशिक कार्यालय, पाला



2. श्रीमती सी.ई.जयश्री, प्रयोगशाला सहायक,  
के.का.प.प्रयोगशाला, मांगानम



3. श्रीमती दीपा सुकुमार,  
क्षेत्रीय अधिकारी  
प्रा का कोट्टारक्करा



4. श्री माधव महांकुड, स्टाफ कार चालक ग्रेड I,  
रबड़ प्रशिक्षण संस्थान

हिंदी भाषी

प्रथम पुरस्कार

श्रीमती नितेश नंदिनी  
गौतम, क्षेत्रीय अधिकारी,  
प्रा का गुआहाटी



द्वितीय पुरस्कार

श्री ब्रजेश कुमार मेहरा,  
वैज्ञानिक सहायक, प्रा अ  
स्टे अगर्तला

तृतीय पुरस्कार

श्रीमती सीमा कोहली,  
आशुलिपिक ग्रेड 1, उप  
कार्यालय, नई दिल्ली



चौथा पुरस्कार

श्री आलेख कुमार, कनिष्ठ  
सहायक, प्रा का गुआहाटी

प्रशंसनीय प्रमाणपत्र



श्रीमती आदित्या सोमशेखरन पिल्लै, क. सहायक,  
श्रीमती बैनी रेजी, क्षेत्रीय अधिकारी, प्रा का अडूर



श्री बाबुराज ई जी, उत्पाद शुल्क निरीक्षक,  
रबड़ बोर्ड मुख्यालय



श्री चंद्रन कराता,  
स.वि. अधिकारी,  
प्रा.का., पुत्तूर

श्रीमती कुंजम्मा  
ईप्पान, कनिष्ठ  
सहा.ग्रेड 1, प्रा का  
पत्तनंतिट्टा

श्रीमती दिव्यराजी पी एन  
क्षेत्रीय अधिकारी,  
प्रा का मंजेरी

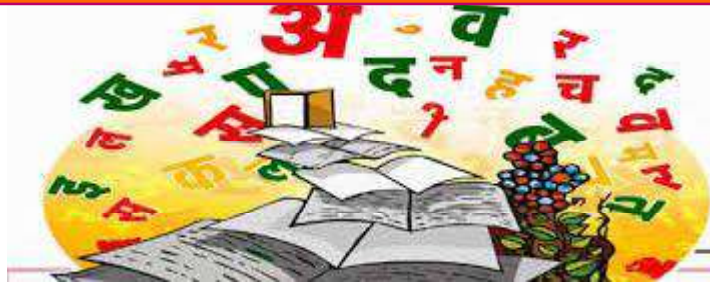
श्रीमती प्रभावती के  
क्षेत्रीय अधिकारी  
प्रा का मंजेरी

श्री जयराजन पारायी  
स्टाफ कार चालक,  
प्रा का श्रीकंठापुरम

श्री मुरुकराजन एस  
बैरा, उप कार्यालय  
नई दिल्ली



## कैसे बनी हिंदी हमारी राजभाषा - क्या है हिंदी दिवस का महत्व



हिंदी हमारी राजभाषा बनी 14 सितंबर 1949 को। इसी ऐतिहासिक महत्व के कारण 1953 से हर वर्ष भारत में सभी जगह हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। भारत की जनगणना 2011 में 57.1% भारतीय आबादी हिंदी जानती है। जिसमें से 43.63% भारतीय लोगों ने हिंदी को अपनी मूल भाषा या मातृभाषा घोषित किया था। भारत के बाहर, हिंदी बोलने वाले संयुक्त राज्य अमेरिका में 8,63077, मॉरीशस में 6,75170; दक्षिण अफ्रीका में 7,90292 यमन में 2,32760 युगांडा में 1,47000 सिंगापुर में 5000 नेपाल में 8 लाख; जर्मनी में 30,000 हैं। न्यूजीलैंड में हिंदी चौथी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है।

इसके अलावा भारत, पाकिस्तान और अन्य देशों में 14 करोड़ 10 लाख लोगों द्वारा बोली जाने वाली उर्दू, मौखिक रूप से हिन्दी के समान ही है। एक विशाल संख्या में लोग हिंदी और उर्दू दोनों को ही समझते हैं। भारत में हिन्दी, विभिन्न भारतीय राज्यों की 22 आधिकारिक भाषाओं और क्षेत्र की बोलियों का उपयोग करने वाले लगभग 1 अरब लोगों में से अधिकांश की दूसरी भाषा है।

हिन्दी भारत में संपर्क भाषा का कार्य करती है और कुछ हद तक पूरे भारत में आमतौर पर एक सरल रूप में समझी जानेवाली भाषा है। कभी-कभी 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग नौ भारतीय राज्यों के संदर्भ में भी उपयोग किया जाता है, जिनकी आधिकारिक भाषा हिंदी है और हिन्दी भाषी बहुमत है, अर्थात् बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश,

झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का सन 2020 में हिन्दी को नवगठित संघ शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर की एक आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता मिली।

### कैसे हिंदी बनी राजभाषा

साल 1947 में जब अंग्रेज़ी शासन से भारत आजाद हुआ तो उसके सामने भाषा को लेकर सबसे बड़ा सवाल था। क्योंकि भारत में सैकड़ों भाषाएं और बोलियां बोली जाती हैं। ऐसे में कौन सी भाषा को राष्ट्रभाषा चुनी जाएगी ये काफी महत्वपूर्ण मुद्दा था। काफी सोच विचार के बाद 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने निर्णय लिया कि हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी।

26 जनवरी 1950 को जब हमारा संविधान लागू हुआ तो इसमें देवनागरी में लिखी जाने वाली हिंदी सहित 14 भाषाओं को आठवीं अनुसूची में आधिकारिक भाषा के रूप में रखा गया था। संविधान के अनुसार, पंद्रह वर्ष के बाद 26 जनवरी 1965 को हिंदी को अंग्रेज़ी के स्थान पर देश की आधिकारिक भाषा बनना था और उसके बाद हिंदी में ही विभिन्न राज्यों को आपस में और केंद्र के साथ संवाद करना था।

लेकिन दक्षिण भारत के राज्यों में रहने वालों को डर था कि हिंदी के लागू हो जाने से वे उत्तर भारतीयों के मुकाबले विभिन्न क्षेत्रों में कमज़ोर स्थिति में हो जाएंगे। हिंदी को लागू करने और न लागू करने के आंदोलनों के बीच वर्ष 1963 में राजभाषा

अधिनियम पारित किया गया, जिसने 1965 के बाद अंग्रेज़ी को राजभाषा के तौर पर इस्तेमाल न करने की पाबंदी को खत्म कर दिया। हालांकि, हिंदी का विरोध करने वाले इससे पूरी तरह संतुष्ट नहीं थे और उन्हें लगता था कि पंडित जवाहर लाल नेह्रू के बाद इस कानून में मौजूद कुछ अस्पष्टता फिर से उनके विरुद्ध जा सकती है।

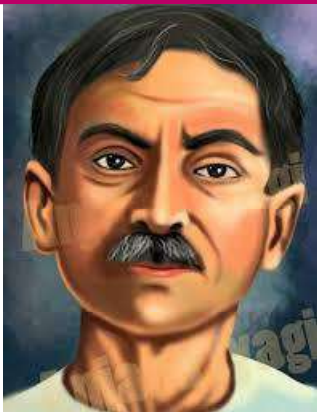
26 जनवरी 1965 को हिंदी देश की राजभाषा बन गई और इसके साथ ही दक्षिण भारत के राज्यों खास तौर पर तमिलनाडु में आंदोलनों और हिंसा का एक जबरदस्त दौर चला और इसमें कई छात्रों ने आत्मदाह तक कर लिया। इसके बाद लाल बहादुर शास्त्री के मंत्रिमंडल में सूचना और प्रसारण मंत्री रहीं इंदिरा गांधी के प्रयासों से इस समस्या का समाधान ढूंढा गया जिसकी परिणति 1967 में राजभाषा कानून में संशोधन के रूप में हुई। उल्लेखनीय है कि इस संशोधन के जरिए अंग्रेज़ी को देश की राजभाषा के रूप में तब तक आवश्यक मान लिया गया जब तक कि गैर हिंदी भाषी राज्य ऐसा चाहते हों आज तक यही व्यवस्था चली आ

रही है।

**हिंदी के प्रोत्साहन के लिए दिए जाते हैं पुरस्कार** - केंद्र सरकार के विविध कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के बेहतर कार्यान्वयन हेतु कई पुरस्कार दिए जाते हैं। जैसे - राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राष्ट्रभाषा गौरव पुरस्कार। कीर्ति पुरस्कार ऐसे विभाग को दिया जाता है जिसने वर्ष भर हिंदी में कार्य को बढ़ावा दिया हो, वहीं राष्ट्रभाषा गौरव पुरस्कार तकनीकी विज्ञान लेखन हेतु दिया जाता है।

### सरकारी स्तर पर बढ़ावा देने की जरूरत

उत्तर भारत के लगभग सभी हिस्सों में साधारण लोगों की बोलचाल, पढाई-लिखाई से लेकर संस्थागत स्तर तक हिंदी को जगह मिली हुई है। लेकिन इसके अलावा भी देश के ज्यादातर इलाकों में हिंदी ने जो जगह बनाई है, उसमें इसके विकास और प्रसार की बड़ी संभावनाएं हैं। पर यह सभी संभव हो पाएगा जब सरकार के स्तर पर इसके प्रयोग को बढ़ावा दिया जाएगा और कुछ मामलों में इसे अनिवार्य भी बनाया जाएगा।



### मुंशी प्रेमचंद

(31 जुलाई 1880  
अक्टूबर 1936)

वास्तविक नाम  
धनपतराय श्रीवास्तव

हिन्दी और उर्दू के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार एवं विचारक उपन्यास सम्राट के नाम से जाने जाते हैं

उपन्यास सम्राट नाम दिया शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने

पहला उपन्यास - सेवासदन

अंतिम उपन्यास - मंगलसूत्र (अपूर्ण)

(अमृतराय ने इस उपन्यास को पूरा किया)

कलम का सिपाही नाम दिया - अमृत राय ने

उपन्यास - गोदान, गबन, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, वरदान, प्रेमाश्रय, निर्मला, प्रतिज्ञा, कायाकल्प, मंगलसूत्र

कहानी संग्रह - 'मानसरोवर' शीर्षक से 8 भागों में प्रकाशित

नाटक - संग्राम, सृष्टि

## कामकाजी महिलाओं के लिए शाक वाटिका



उषा जी मेनोन  
सहायक



सी ई जयश्री  
प्रयोगशाला सहायक

रबड़ बोर्ड की एक पदधारी श्रीमती उषा जी मोनोन और अपने फ्लैट की सहेलियों द्वारा फ्लैट की छत पर की जा रही खेती के लिए केरल सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया था। इस पर रबड़ बोर्ड की ही एक पदधारी श्रीमती सी ई जयश्री द्वारा लिखा गया लेख है यह।

आज हम इक्कीसवीं सदी में हैं। पुरुषों के समान महिलाएं भी अपने परिवार चलाने के लिए बाहर जाकर काम करती हैं। इसी वजह से आज की महिलाओं से हमेशा यह सुनाई देती है कि मेरे पास समय नहीं है।

ऑफिस का काम करना है घर का काम करना है। एक दिन के चौबीसों घंटे मेरे लिए पर्याप्त नहीं है।

लेकिन कुछ महिलाएं ऑफिस के काम के साथ ही साथ अधिक आमदनी और मनोरंजन के लिए और साइड बिज़नेस

के रूप में किचन गार्डन भी करती हैं। उनके पास भी एक दिन केवल चौबीस घंटे ही होते हैं। फिर भी वे लोग अपने समय को सही ढंग से उपयोग करते हैं। घर का सारा काम योजनाबद्ध तरीके से करती हैं तथा अगले दिन के लिए रसोई काम सब तैयार करके फ्रिज में रखती हैं। ऐसी रीति की

वजह से सुबह और शाम को उनके पास अधिक समय होता है। उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी बेहतर रहते हैं।

हम महिलाएँ अपनी रसोई के सामने जगह की उपलब्धता के

अनुसार कुछ सब्जियों की खेती कर सकते हैं। मुझे भी इस प्रकार का एक बाग है। मेरे बगीचे में बैंगन, भिंडी, मिर्च, करेला, टमाटर,

अदरक, ककड़ी आदि है। कीटों के नियंत्रण के लिए जैविक पदार्थों का प्रयोग करती हूँ। तंबाकू और साबुन पानी में मिलाकर और नीम के तेल के साथ मिश्रित करके पत्तियों में डालती हूँ।

महिलाएँ मिलकर समूह खेती भी कर सकती हैं। इसके लिए होने वाले खर्च और जगह आपस





में शेयर कर सकते हैं। यदि जगह की कमी हो तो छत की खेती भी कर सकती है। पॉलीबैग में गोमूत्र, डोलमैट, कंपोस्ट, गाय की गोबर, बोनमील आदि मिट्टी के साथ मिलाकर मटका भरके तैयार

श्रीमती उषा जी मेनोन के ही शब्दों में - ठकामकाजी महिलाओं को घर और ऑफिस के काम करने के साथ-साथ खाली समय खोज निकालना चाहिए और उसका भरपूर फायदा उठाने की कोशिश करनी



करना चाहिए।

इसी प्रकार हमें भी अपने रसोई के लिए आवश्यक सब्जियों को अपने ही घर में तैयार करना चाहिए। तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश जैसे अन्य राज्यों से यहां आने वाली सब्जियों की गुणवत्ता व स्रोत हमें पता नहीं है। आज कैंसर, अलशिमेर्स, श्वासरोग जैसी बीमारियों की संख्या बढ़ रही हैं। इसलिए आइए, हमें विषैली सब्जियां छोड़कर अपने ही घर के आंगन में एक शाक वाटिका शुरू करेंगे।

चाहिए। ऑफिस से रिटायर होने के बाद हम कुछ करेंगे, ऐसे विचार आम तौर पर हमें होती हैं। लेकिन तब तक कोलस्ट्रॉल, प्रशर, डायबेटिस सब हमें ढूँढ पाएंगे। इस लिए जब हम तंदुरुस्त और स्वस्थ रहते हैं, समय की कमी को न कोसकर हमें उपलब्ध समय का सदुपयोग करना चाहिए। इस दृष्टिकोण में मेरे प्लैट में मेरे नेतृत्व में 21 कामकाजी महिलाएं मिलकर एक संघ का गठन करके हमारे ही अपार्टमेंट की छत पर बाती की सिंचाई नाम की



रबड़ बोर्ड के मुख्यालय में काम करने वाली श्रीमती उषा जी मोनोन, सहायक हमारे लिए एक मॉडल है। उन्होंने अपने अपार्टमेंट में अपनी 21 सहेलियों के साथ छत की खेती करके 2019 में केरल सरकार का कृषि पुरस्कार जीता था।

आधुनिक कृषि पद्धति के अनुसार वाइटिला एरणाकुलम के कृषिभवन के सहयोग से सब्जियों की खेती शुरू की। हम लोग कामकाजी महिलाएँ होने के नाते कृषि अधिकारी अपने ड्यूटी समय के बाद हमारे अपार्टमेंट में आकर हमें कृषि के संबध

में सलाह दिए। कृषि के लिए सहायिकी भी शुरुआत में ही दी तथा खेती शुरू करने के लिए आवश्यक गतिविधियां भी पूरी की।

हमारी सफलता का राज हमारा एकजुट प्रयास है। एक साल के अंदर ही हमारी खेती ने बहुत लोगों का ध्यान आकर्षित किया था। राज्य सरकार के सर्वश्रेष्ठ रेसिडेंट्स एसोसिएशन श्रेणी में

कृषि पुरस्कार माननीय कृषि मंत्री वी एस सुनिलकुमार से वर्ष 2019 में प्राप्त किया। छत की खेती से प्रेरित होकर एरणाकुलम शहर के ही अन्य अपार्टमेंट के लोग हमारे अपार्टमेंट का दौरा करके हमें उदाहरण बनाकर एक संघ का गठन करके अपने अपार्टमेंट पर छत की खेती शुरू की।



## रसोई घर

### नारियल और मैदा का स्नैक



एम मंजुला

कनिष्ठ सहायक ग्रेड I  
रबड़ बोर्ड मुख्यालय

#### आवश्यक सामग्रियाँ

नारियल - एक कप

मैदा - 2 कप

चीनी - एक कप

तेल - फ्राई करने के लिए

#### तैयार करने की विधि

1. एक कप नारियल में एक कप चीनी डालकर अच्छी तरह मिलाएं। एक घंटे के लिए अलग रख दें।
2. एक घंटे के बाद इस मिश्रण में मैदा थोडा-

थोडा डालकर आटा जैसे बनाएं। मिश्रण को समान हिस्सों में बांट लें। मिश्रण के हर एक हिस्से को नींबू की तरह गोल बनाकर हथेलियों के बीच में हल्का दबाएं और गोलाकार के कटलैट जैसा बनाएं। सभी को एक प्लेट में रख दें।

3. एक गहरे फ्राइंग पान/कड़ाई में तेल को मध्यम आंच में गरम करें। जब तेल मध्यम नरम हो जाए दौ-तीन स्नैक को एक साथ तेल में डालें और उसे सुनहरा भूरे होने तक तलें। नारियल का स्नैक तैयार है।

4. ठंडा होने पर परोंसे क्योंकि ठंडा होने पर यह अधिक कुरकुरा हो जाता है।



शुष्क रबड़ संघटक के निर्धारण के लिए रबड़ बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाएं



लाटेक्स के मूल्य निर्धारण करते समय और लाटेक्स आधारित उत्पादों के निर्माण करते समय उसमें शुष्क रबड़ (शुष्क रबड़ संघटक) की मात्रा जानना ज़रूरी है। शुष्क रबड़ संघटक में हल्का सा विचलन भी बड़े आर्थिक नुकसान का कारण हो सकता है इसलिए लाटेक्स की बिक्री करने वाले कृषकों द्वारा और लाटेक्स के संग्रहण में लगे लोगों द्वारा लाटेक्स का नमूना मानक प्रयोगशाला में देकर शुष्क रबड़ संघटक की मात्रा जानना अत्यधिक आवश्यक है। कृषक और अन्य लोग द्वारा शुष्क रबड़ संघटक के निर्धारण के लिए रबड़ बोर्ड मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं में नमूना दिए जा सकते हैं। यहां से जिम्मेदारी से बिल्कुल सटीक शुष्क रबड़ संघटक का मूल्यांकन आप प्राप्त कर सकते हैं। रबड़ बोर्ड ने केरल में ऐसी 10 प्रयोगशालाओं के लिए मान्यता दी है।

रबड़ बोर्ड कंपनियों के स्वामित्व वाली ये प्रयोगशालाएं रबड़ बोर्ड के इंजीनियरी व संसाधन प्रभाग की तकनीकी देखरेख में काम करती है। शुष्क रबड़ संघटक के निर्धारण हेतु सभी सुविधाओं वाली इन प्रयोगशालाओं में रबड़ बोर्ड से प्रशिक्षण प्राप्त लोग शुष्क रबड़ संघटक के निर्धारण कार्य में लगे हैं। इसलिए सही और सटीक परिणाम आप

इन प्रयोगशालाओं से सुनिश्चित कर सकते हैं।

रबड़ बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं में एक नमूने के लिए शुष्क रबड़ संघटक के निर्धारण के लिए शुल्क निम्नानुसार हैं -

शुल्क	- ₹ 50 .00
जी एस टी (18 %)	- ₹ 9.00
बाढ उपकर (1%)	- ₹ .50
कुल	- ₹ 59.50

प्रयोगशालाओं से जी एस टी बिल उपलब्ध कराएँगे।



अदूर रबेर्स के अधीन कार्यरत मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला के प्रमाणपत्र श्री पी अरुमुगम, संयुक्त निदेशक, इंजीनियरी एवं प्रक्रमण प्रभाग ने अदूर रबेर्स के प्रबंध निदेशक श्री पी टी रजिकुमार को दिया।





मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला के प्रमाणपत्र श्री पी अरुमुगम, संयुक्त निदेशक, इंजीनियरी एवं प्रक्रमण प्रभाग ने वल्लत्तोल रबेर्स के प्रबंध निदेशक श्री षाजु वर्गीस को दिया।

### रबड़ बोर्ड मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं के विवरण नीचे दिए जाते हैं -

1. **रबड़ बोर्ड मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला**  
जी एच एस एस रोड, कचेरी जंक्शन  
नेडुमंगाड - 695 541  
फोन - 0472 2804660  
ई मेल - rltvm@rubberboard.org.in
2. **रबड़ बोर्ड मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला**  
मिनी सिविल स्टेशन के पास  
अडूर - 691 523  
फोन - 04734-227168  
ई मेल - arpvtld93@gmail.com
3. **रबड़ बोर्ड मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला**  
सह्याद्री टवेर्स, तोलिकोड पी ओ  
पुनलूर - 691 333  
फोन - 0475 2222945, 04752227281  
ई मेल - sahyadrirubbers@yahoo.co.in
4. **रबड़ बोर्ड मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला**  
मनिमलयार बिल्डिंग्स  
वडवातूर पी ओ, कोट्टयम  
फोन - 0481-2372670, 2572870  
ईमेल - manimalayarrubbers@gmail.com
5. **रबड़ बोर्ड मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला**  
जियो टवेर्स, कत्तीडल जंक्शन  
कांजिरप्पल्ली - 686 507  
फोन - 0482 2203184  
ई मेल - kanjirapallyrubbers@yahoo.co.in
6. **रबड़ बोर्ड मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला**  
वेल्लियाप्पल्लिल बिल्डिंग्स  
पाला - 686 575  
फोन - 0482 2216708  
ई मेल - rlpala@rubberboard.org.in
7. **रबड़ बोर्ड मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला**  
मेरीमाता स्कवर, आरक्कुषा रोड  
मूवाट्टुपुषा  
फोन - 0485 2836996  
ई मेल - periyarlatex@gmail.com
8. **रबड़ बोर्ड मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला**  
वल्लत्तोल रबेर्स बिल्डिंग  
आनप्पारा, रामवर्मपुरम पी ओ  
तृशूर, फोन - 0487 2694105  
ई मेल - vallatholrubbers@yahoo.co.in
9. **रबड़ बोर्ड मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला**  
ईस्ट नडक्कावु, कोषिकोड - 673 011  
फोन - 0495 2369610  
ई मेल - kozhikoderubbers@gmail.com
10. **रबड़ बोर्ड मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला**  
तुंचत्तु एषुत्तच्चन रबेर्स कॉम्प्लेक्स  
कोडतिप्पडी, निलंबूर पी ओ  
फोन - 04931 220610, 04931 222451  
ईमेल - thunchathuezhuthachenrbrs@gmail.com



मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला के प्रमाणपत्र श्री पी अरुमुगम, संयुक्त निदेशक, इंजीनियरी एवं प्रक्रमण प्रभाग ने कोषिकोड रबेर्स के प्रबंध निदेशक श्री के राजीव को दिया।

एम एन बिजु  
सहायक गुणता नियंत्रण अधिकारी



सेवानिवृत्तियाँ - अक्तूबर 2020



श्री कुरुविला जोसफ  
उप रबड़ उत्पादन आयुक्त



श्री राजीवन ई वी  
विकास अधिकारी



श्री शिवमणि के आर  
विकास अधिकारी



श्री एम नेकिबुद्दिन अहमद  
सहायक



श्री के जे पौलोस  
परिचर

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति - अक्तूबर 2020



श्री पी वेलायुधन  
परिचर

सेवानिवृत्ति - नवंबर 2020



श्री कोरगप्पा नाइक एच  
अनुभाग अधिकारी

सेवानिवृत्तियाँ - दिसंबर 2020



श्रीमती गीता जी  
सहायक सचिव



श्री पीयूसमोन ए के  
प्रक्षेत्र अधिकारी



श्री दीपज्योति शर्मा  
सहायक



श्री एब्रहाम ए एम,  
रबड़ टापींग निदर्शक



श्री रंजीत सरकार  
रबड़ टापींग निदर्शक



श्री संतोष नरसिंव सावंत  
स्टाफ कार चालक ग्रेड I

स्वैच्छिक सेवानिवृत्तियाँ - दिसंबर 2020



श्री टोम्स जोसफ  
संयुक्त निदेशक (आर्थिकी)



श्री तोमस जोसफ  
विकास अधिकारी

## कलप्पगोणियम सेरूलियम - रबड़ का अन्य आवरण फसल



**डॉ आनी फिलिप**  
वरिष्ठ वैज्ञानिक  
भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान



**डॉ जेसी एम डी**  
संयुक्त निदेशक (कृषिविज्ञान/मृदा)  
भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान

बागानों में आवरण फसलें बढ़ाने से मृदा क्षरण रोका जा सकता है तथा मृदा के जैविक तत्व बढ़ाने में भी सहायक होता है। केरल के रबड़ बागानों में साधारणतया लगाये जाने वाले फलीदार आवरण फसल प्यूरेरिया, म्यूकुणा आदि के अलावा कलप्पगोणियम सेरूलियम नामक आवरण फसल भी बढ़ायी जा सकती हैं। यह लेख इससे संबंधित है।

रबड़ पौधे लगाने के साथ बागानों में आवरण फसलें बढ़ाने से बागानों से मृदा क्षरण रोका जा सकता है और मिट्टी के जैविक तत्व बढ़ाया जा सकता है। केरल के रबड़ बागानों में साधारणतया प्यूरेरिया फासियोलोयिड्स, म्यूकुणा ब्राक्डीयेटा आदि फलीदार आवरण फसलें बढ़ायी जाती हैं।

हमारे इलाकों में प्यूरेरिया बहुतायत में फूलता है तथा फलता है। लेकिन केरल की जलवायु स्थिति में म्यूकुणा का पुष्पन एवं फलन बहुत कम है। प्यूरेरिया बहुत जल्द जड़ पकड़ता है बागानों में फैल जाता है। लेकिन गर्मी में सूख जाएगा। इसके

अलावा बागानों की छाया बढ़ते ही प्यूरेरिया की वृद्धि अवरुद्ध हो जाएगी तथा धीरे धीरे नष्ट हो जाएगा। इसलिए प्यूरेरिया बढ़ाये गये बागानों में रबड़ पौधे बढ़कर वितान के पत्रक एक दूसरे से जुड़ने के समय पर आवरण फसल पूर्ण रूप से नष्ट हो जाने की स्थिति आएगी। म्यूकुणा के डंडल जड़ पकड़ने के लिए देरी होने के कारण प्रारंभ में इस आवरण फसल की वृद्धि धीमी रहेगी। लेकिन बाद में तेज वृद्धि से पूरा बागान भर जाएगा। इस फसल को गर्मी से जूझने की क्षमता होने के कारण गर्मी के मौसम में भी मिट्टी के लिए अच्छे आवरण के रूप में बना रहेगा। म्यूकुणा छाया में भी बढ़ने के कारण रबड़ पेड़ों के बढ़ जाने के बाद भी मिट्टी के लिए एक आवरण के रूप में बागान में बनी रहेगी।

म्यूकुणा के जैसा छाया तथा गर्मी में बढ़नेवाला अन्य एक फलीदार आवरण फसल है कलप्पगोणियम सेरूलियम हमारे राज्य में यह फूलेगा तथा फलेगा। कलप्पगोणियम में पुष्पन जनवरी-फरवरी महीनों में





होता है। अम्ल उपचार (गाढे सलफ्यूरिक अम्ल में 10 मिनट डालके रखने के बाद अच्छी तरह धोया हुआ) के बीज की बुवाई से या डंठल रोपकर इस आवरण फसल बागानों में लगायी जा सकती है। म्यूकुणा से जल्दी इसका अंकुरण होगा। म्यूकुणा की तुलना में इस फली की वृद्धि कम तो रहेगी लेकिन धीरे धीरे अच्छी वृद्धि लेकर पूरा बागान भर फैलेगा। कलप्पगोणियम सेरुलियम छाया में भी

फली होने के कारण मिट्टी के लिए अच्छे आवरण के रूप में बना रहेगा तथा मृदा में अधिक नमी बनाई रखेगी। अनानास अंतराफसल के रूप में खेती किए एक बागान में अनानास उखाड़े जाने के बाद कलप्पगोणियम सेरुलियम बढ़ाया गया तथा गर्मी में इस बागान की नमी निकट के बिना आवरण फसल के अन्य एक बागान से 15 प्रतिशत अधिक पायी गयी।



म्यूकुणा की तुलना में कलप्पगोणियम सेरुलियम में नाइट्रोजन की मात्रा कम, पोटैशियम, कैल्शियम, मग्नीशियम आदि पोषक तत्वों की मात्रा अधिक है। यह आवरण फसल वाले बागानों में म्यूकुणा वाले बागानों की तुलना में मिट्टी की अम्लता घटती पायी गयी।

बढ़ने के कारण रबड़ बागानों में प्रारंभिक चरण के अंतराफसलन के बाद भी यह आवरण फसल बढ़ायी जा सकती है। गर्मी से जूझने की क्षमता वाली

कलप्पगोणियम सेरुलियम की प्रारंभिक वृद्धि धीमी है। इसलिए रबड़ खेती के प्रारंभिक चरण में यह आवरण फसल बढ़ायी जाएगी तो नियमित रूप से अपतृण नियंत्रण करना चाहिए। नहीं तो घरपतवार इस आवरण फसल का नुकसान करेगा। लेकिन अंतराफसलन के बाद आवरण फसल लगाए जाएं तो जल्द ही पूरे बागान में यह बढ़ जाएगा।



**हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।**



**डॉ राजेंद्र प्रसाद**

## नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग द्वारा अधिक आमदनी

रबड़ उत्पादन घटने के कई कारण हो सकते हैं। जलवायु परिवर्तन, मृदा की उर्वरता में कमी, गैर वैज्ञानिक तरीकों में टापिंग करना आदि फसल घटने के कारण हैं। एक अन्य मुख्य कारण कम उत्पादन वाले वयस्क रबड़ पेड़ों को बागानों में रखे रखना है। लेकिन इसका एक हल है नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग। इस टापिंग प्रणाली द्वारा रबड़ पेड़ों का उत्पादन 50 प्रतिशत से अधिक बढ़ाया जा सकता है। नये टापिंग फलक के ऊपर के मूल टापिंग फलक पर पेड़ की परिधि के एक चौथाई मात्र लेकर सुधरे गये गूज चाकू प्रयुक्त करके करने वाली टापिंग प्रणाली है नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग। इस तरह की फसलन अपनायी जाएगी तो नये फलक के ऊपर के अक्षत फलक की लंबी अवधि तक टापिंग की जा सकेगी।



चित्र 1



आर राजगोपाल

वरिष्ठ वैज्ञानिक, रबड़ अनुसंधान संस्थान

### नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग कब करनी है?

नये टापिंग फलक पर उत्पादन कम होने पर नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग शुरू की जा सकती है। टापिंग की कमियों के कारण आंतरिक छाल (केंबियम) में चोट लगकर काला धब्बा होने के कारण या टापिंग फलक अवरुद्ध होने से या अन्य रोगों के कारण नवीन फलक पर टापिंग असंभव होने की स्थिति में ऐसे पेड़ों पर नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग की जा सकती है। टापिंग फलक अवरुद्ध होने वाले पेड़ों पर उससे ऊपर के फलक पर लाटेक्स हो तो इस तरह की टापिंग जारी की जा सकती है। पेड़ की फसलन अवधि अधिकतम बढ़ाने तथा ऊपरी फलक और निचली फलक बदल बदलके टाप करने में नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग सहायक हो सकती है। रबड़ पेड़ों में मूल फलक की टापिंग बड़ संयोग से 150 से मी. ऊँचाई से नीचे की ओर ए और बी पैनेलों में है। सामान्यतया इस तरह ए और बी फलकों के मूल फलकों की टापिंग पूरी हो जाने पर इन्हीं स्थानों पर होनेवाले नवीन फलकों पर (सी और डी फलक) टापिंग चलाई जाती है। मूल फलक पर टापिंग करते वक्त होने वाली कमियों के कारण नवीन फलकों से प्राप्त होनेवाला उत्पादन कम होता है। सी फलक की टापिंग शुरू होने से ही नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग शुरू की जा सकती है। 150 से मी. से ऊपर के मूल फलक पर अधिकतम 2 मीटर की ऊँचाई तक के हिस्से में





चित्र 2

नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग की जा सकती है। इस कारण से एक पेड़ से लंबी अवधि तक फसल ली जा सकती है तथा पुनर्रोपण के बीच का अंतराल बढ़ाकर खर्च कम किया जा सकता है। वयस्क पेड़ों और कम फसलवाले पेड़ों में नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग अपनाने से औसतन 50 प्रतिशत तक उत्पादन बढ़त हासिल की जा सकती है।

### टापिंग फलक का अंकन

वर्तमान में सी पैनल पर प्रथम वर्ष या दूसरे वर्ष में टाप करने वाले पेड़ों पर नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग करने के लिए कैसे अंकन करना है, हम देखेंगे। इसके लिए सी पैनल के पूर्व नाल रेखा सीधे ऊपर की ओर (मूल फलक की ओर) दो मीटर तक खींचे। उस स्थान के पेड़ की औसतन मोटाई नापकर इस रेखा को आधार बनाकर एक चौथाई हिस्से के चार पैनल अंकित करें। इसमें बी पैनल के ऊपर आनेवाले 2 पैनलों में दाहिने हिस्से के पैनल में पहले टापिंग शुरू करें। इसके बाद फलक खतम होते ही याने दो वर्ष के बाद इस फलक के दाहिने भाग पर आनेवाले पैनलों को एक

एक करके 24-24 महीने ऊर्ध्वमुखी टापिंग करना है। फलक निचले की ओर होने के कारण 45 डिग्री ढलाई में अंकन करना चाहिए (चित्र 1, 2)। फलक के अंकन के बाद आम चाकू या जबोंग चाकू द्वारा टापिंग नाल खोलना चाहिए। पहले के दो तीन बार की टापिंग उसी चाकू से करने के बाद ही सुधरे गये गूज चाकू का उपयोग किया जा सकता है। नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग में आगे के नल से शुरू होकर पीछे के नल की ओर काटा जाता है। इसलिए आगे के नल से 6 इंच नीचे में टोंटा लगाना चाहिए। टोंटा आगे के नल से निकट रहे तो गूज चाकू द्वारा टाप करने में असुविधा है। टोंटा के नीचे लाटेक्स भरी खोपड़ी आसानी से निकालने योग्य तरीके से खोपड़ी धारी लगा सकते हैं।

### सुधरी हुई गूज चाकू

नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग में टापिंग फलक भूतल से 125 से मी से अधिक ऊँचाई में होने के नाते खड़े खड़े सही तरीके से टाप करने के लिए सुधरी हुई गूज चाकू (लंबे हत्थावाला) का ही उपयोग करना चाहिए। एक प्रशिक्षित व्यक्ति इस चाकू प्रयुक्त करके अनुशंसित मोटाई तथा लंबाई में फलक काट सकता है और ऊर्ध्वमुखी फलक होने पर भी टापिंग नला होकर ही लाटेक्स बहने (फलक में फैलकर लाटेक्स बहे बिना) के तरीके से सही तरह टापिंग भी कर पाएंगे। अन्य चाकू का उपयोग करें तो उपर्युक्त नियंत्रणों के साथ टापिंग न कर पाने से टापिंग की गुणवत्ता और पेड़ पर बुरा असर पड़ेगा। अपने प्रांत के प्रादेशिक कार्यालयों से संपर्क करके नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग में प्रशिक्षण पा सकते हैं।

### उत्तेजक औषधियों का प्रयोग

नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग करते वक्त टापिंग नाल की लंबाई कम करने के कारण वास्तविक उत्पादन प्राप्त करने के लिए अनुशंसित मात्रा में





चित्र 3



चित्र 4

एत्तिफोन नामक उत्तेजक औषधि का प्रयोग करना चाहिए। बाजार में उपलब्ध 10 प्रतिशत गाढता की औषधि 5 प्रतिशत गाढता में तरल बनाकर (1:1 के अनुपात में नारियल का तेल या पामोलिन मिलाकर)

पेड़ पर सटकर सूखे लाटेक्स के ऊपर लगाना चाहिए।

आरआरआईआई 105 किस्म के पेड़ों में 1/4 परिधि में तीन दिन में एक बार नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग करने पर महीने में एक बार टापिंग के अगले दिन औषधि का लेपन करना चाहिए। टापिंग के बीच का अंतराल बढ़ाकर सप्ताह में एक बार के तरीके से भी नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग की जा सकती है। तब टापिंग नाल की लंबाई परिधि की 1/3 होनी चाहिए। इसके अलावा प्रत्येक दूसरे टापिंग के बाद तीसरे टापिंग से तीन दिन पूर्व 5 प्रतिशत गाढता में औषधि का लेपन करना चाहिए। हमारे प्रांत की जलवायु स्थिति के अनुसार जून से नवंबर तक के वर्षा काल में निचले फलक पर आधी परिधि में वर्षा रक्षण के साथ टापिंग करना, वर्षा मौसम के बाद दिसंबर से लेकर आगामी वर्ष के मई महीने तक ऊपरी फलक पर नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग ही करना। इस तरह निचले फलक तथा ऊपरि फलक पर बदल बदल के टापिंग करने का तरीका ही हमारे मौसम के लिए



चित्र 5

अंतराल	प्रत्येक टापिंग में काटने के फलक की मोटाई	महीने के औसतन फलक उपभोग	प्रत्येक फलक के वर्ष (वर्ष में 6 महीने नि ऊ टापिंग)	नि ऊ टापिंग संभव वर्ष
एकांतर	1.5 मि मी	2.0 से मी	4 (24 महीना)	16
3 दिन	1.75 मि मी	1.7 से मी	4 (24 महीना)	16
4 दिन	2.0 मि मी	1.4 से मी	5 (30 महीना)	20
7 दिन	2.5 मि मी	1.0 से मी	7 (42 महीना)	28

उपयुक्त है।

बहुत खराब और निम्न गुणवत्ता की टापिंग (चित्र 3, 4) से निचले फलक पूर्ण रूप से टापिंग के लिए अयोग्य होने की स्थिति में वर्ष भर नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग करना पड़ता है। वर्षा मौसम में 90 से मी चौड़ा वर्षारक्षक डालकर नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग की जाती है। लेकिन वर्षा मौसम में चौड़े वर्षारक्षक डालकर टाप करना (चित्र 5) व्यावहारिक रूप से मुश्किल देती है। इसीलिए ही नीचे के फलक की गुणवत्ता बहुत मुख्य है। कृषकों को इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

### ध्यान देने की बातें

1. टापिंग नाल की लंबाई कभी भी आधी परिधि नहीं रखनी चाहिए। 1/4 टापिंग नाल ही बढ़िया है।
2. नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग के लिए कभी भी देशी/जबोंग चाकुओं का उपयोग नहीं करना

चाहिए। अवश्य ही सुधरी गई गूज चाकुओं का ही उपयोग करें।

3. वर्षा के मौसम में नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग मुश्किल होता है। खराब टापिंग द्वारा धब्बा लगकर बाद का उत्पादन प्रभावित होता है।
4. अनुशंसित मात्रा में ही एतिफोन का प्रयोग करें।

कुछ कृषकों के बीच ऊर्ध्वमुखी टापिंग समापन टापिंग होने की गलतफहमी है। सही तरीके से ऊर्ध्वमुखी टापिंग करेगा तो ऊपरी फलक से (निचले फलक अवरुद्ध पेड़ों से भी) लंबी अवधि तक बेहतर आय प्राप्त किया जा सकता है। तीन दिनों के अंतराल में टाप करने वाले पेड़ होने पर भी नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग भी अपनाए तो लगभग 30-32 वर्षों तक आमदनी प्राप्त की जा सकती है।



## हिंदी कहावत

### कम शब्दों में बड़ी बात

**अक्लमंद के कान बड़े और जुबान छोटी**

अर्थ- समझदार आदमी सबकी बात सुनता अधिक है और बोलता कम है।

**अगले पानी पिछले कीच**

अर्थ- जो पहले पानी भरने आता है उसे पानी मिलता है, बाद में आने वाले को कीचड़ मिलती है।

## हिंदी दिवस समारोह

**प्रादेशिक कार्यालय तलिपरंबा** में 24 सितंबर 2020 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती षैलजा एम, प्रोफसर बीएड प्रशिक्षण कॉलेज, नीलेश्वरम प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री ए वी सुब्रमण्यन नंबूतिरी, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। उप रबड़ उत्पादन आयुक्त प्रभारी और निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं:-



### I टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - उषा के, अनुभाग अधिकारी

द्वितीय - निखिला एन के, क. सहायक ग्रेड I

तृतीय - ओमना के के, सहायक



### II. कवितापाठ

प्रथम - रोषनी पी, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - ए वी सुब्रमण्यन नंबूतिरी, वि.अधिकारी

तृतीय - निखिला एन के, क. सहायक ग्रेड I

**प्रादेशिक कार्यालय पत्तनतिट्टा** में 29 अक्टूबर 2020 को हिंदी दिवस मनाया गया। श्री तोमस मात्यु, प्रधान अध्यापक, सेंट पॉल हाई स्कूल, नरियापुरम प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्रीमती लीना तोमस, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। श्रीमती ओमना सी आर, विकास अधिकारी और श्री ए आर दिवाकरन,

सहायक विकास अधिकारी के गानालापनों के साथ सम्मेलन बडी धूमधाम से मनाया। इस सिलसिले में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं:-



### I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - सिसिली वरुगीस, क.सहायक ग्रेड I

द्वितीय - षैनी के पोन्नन, स. विकास अधिकारी

तृतीय - जयश्री एम आर, क्षेत्रीय अधिकारी

### II. भाषण

प्रथम - दिलीप सी एल, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - ओमना सी आर, विकास अधिकारी

तृतीय - जूसी पी जोर्ज, क्षेत्रीय अधिकारी

### III. कवितापाठ

प्रथम - जयश्री एम आर, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - षीबा जोर्ज, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - कुंजम्मा ईप्पन, क.सहायक ग्रेड I

**प्रादेशिक कार्यालय श्रीकंठापुरम** में 30 सितंबर 2020 को हिंदी दिवस मनाया गया। श्रीमती जयंती, एचएसए, के पी सी एच एस एस, पट्टानूर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। इस सिलसिले में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। श्रीमती षीजा टीपी, विकास अधिकारी के कृतज्ञता ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का



शुभांत हुआ। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

### I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - श्रीमती आन्सी टी के, क्षेत्रीय अधिकारी  
द्वितीय - श्रीमती संध्या पी आर, क. सहायक ग्रेड I  
तृतीय - श्री जयराजन पी, स्टाफ कार चालक

### II. कवितापाठ

- प्रथम - श्रीमती संध्या पी आर, क. सहायक ग्रेड I  
द्वितीय - श्री मधुसूदनन के एम, अनुभाग अधिकारी  
तृतीय - श्रीमती विलासिनी ए पी, विकास अधिकारी

**प्रादेशिक कार्यालय पालक्काड** में 30 सितंबर 2020 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री एन सोमसुंदरम, एच एस एस टी (सेवानिवृत्त), जी एच एस एस, पालक्काड प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्रीमती के के कमलाक्षी, विकास अधिकारी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री सी वी वेणुगोपालन, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

### I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - श्रीमती पी रजनी, सहायक  
द्वितीय - श्रीमती पार्वती एम पी, सहायक  
तृतीय - श्री वी ए कृष्णप्रसाद, स. विकास अधिकारी



### II. भाषण

- प्रथम - श्री सी वी वेणुगोपालन, क. सहा ग्रेड I  
द्वितीय - श्री मनोजकुमार, स्टा.कार चालक ग्रेड I  
तृतीय - श्रीमती मिनिमोल एम एस, स.वि. अधिकारी



### III. कवितापाठ

- प्रथम - श्री सी वी वेणुगोपालन, क. सहा ग्रेड I  
द्वितीय - श्री मनोजकुमार, स्टा.कार चालक ग्रेड I  
तृतीय - श्रीमती मिनिमोल एम एस, स.वि. अधिकारी

**प्रादेशिक कार्यालय मण्णार्काड** में 30 सितंबर 2020 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री पी गोकुलन, विकास अधिकारी ने समारोह का उद्घाटन किया। श्री विजयन के, एच एस ए, के टी एम हायर सेंकडरी स्कूल मण्णार्काड प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्रीमती वल्सला मातुक्कल, सहायक विकास अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

### I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - श्री सुभाष के सी, सहायक  
द्वितीय - श्री मोहनदास के वी, क.सहा.ग्रेड I  
तृतीय - डॉ प्रिया पी बी, क्षेत्रीय अधिकारी





## II. कवितापाठ

- प्रथम - डॉ प्रिया पी बी, क्षेत्रीय अधिकारी  
द्वितीय - श्री सुभाष के सी, सहायक  
तृतीय - श्री विनोदकुमार वी आर, क.स.ग्रेड I

**प्रादेशिक कार्यालय निलंबूर** में 30 सितंबर 2020 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। डॉ शिवनकुट्टी, एच एस टी, जी वी एच एस एस मंपाड प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री राधाकृष्णन टी पी, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। श्रीमती शीजा ए एन, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I ने स्वागत भाषण किया। श्री मधु सी बी, सहायक विकास अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

### I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - शीजा ए एन, क. सहायक ग्रेड I  
द्वितीय - श्री राजु बी वी, सर्वेक्षण निरीक्षक  
तृतीय - श्रीमती अनिता पी, सहायक



## II. कवितापाठ

- प्रथम - श्रीमती अनिता पी, सहायक  
द्वितीय - श्री राजु बी वी, सर्वेक्षण निरीक्षक  
तृतीय - श्री जस्टिन सी एम, स.वि. अधिकारी

**प्रादेशिक कार्यालय मैंगलूर** में 29 सितंबर 2020 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। डॉ मुकुमद प्रभु, एसोसिएट प्रोफसर हिंदी, सेंट अलोशियस कॉलेज, मैंगलूर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री एस बालकृष्णा, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि ने पुरस्कारों का वितरण किया तथा प्रतियोगिताओं में भाग लिए सभी का अभिनंदन किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

### I टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - श्रीमती शांति एस, कनि. सहायक ग्रेड I  
द्वितीय - श्री गोपकुमार, क्षेत्रीय अधिकारी  
तृतीय - श्रीमती शशिकला के, अनुभाग अधिकारी



## II. कवितापाठ

- प्रथम - श्रीमती सुजाता सी डिसूज़ा, क.स. ग्रेड I  
द्वितीय - श्रीमती शांति एस, कनि. सहायक ग्रेड I  
तृतीय - श्री जोय जोण, सहा. विकास अधिकारी

**प्रादेशिक कार्यालय तोडुपुषा** में 18 सितंबर 2020 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री पी टी तोमस, एच एस ए (सेवानिवृत्त) प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्रीमती मेरिकुट्टी बेबी, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। श्रीमती जयमोल सी एल, विकास अधिकारी ने समारोह में भाग लिए सभी का स्वागत किया। मुख्य अतिथि ने पुरस्कारों का वितरण किया और हिंदी दिवस पर भाषण दिया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बड़ी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

### I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - श्रीमती सतीना सी बी, क.सहायक ग्रेड I  
द्वितीय - श्रीमती मेरिकुट्टी बेबी, वि. अधिकारी  
तृतीय - श्रीमती शैलम्मा जोसफ, क्षेत्रीय अधिकारी

### II. भाषण

- प्रथम - श्रीमती नैसी तोमस, क्षेत्रीय अधिकारी  
द्वितीय - श्री नसीर के ए, स. विकास अधिकारी  
तृतीय - टी सी सेबास्ट्यन, स. विकास अधिकारी

### III. कवितापाठ

- प्रथम - श्रीमती सतीना सी बी, क.सहायक ग्रेड I  
द्वितीय - श्री के टी मात्यु, रबड़ टापींग निदर्शक  
तृतीय - श्रीमती जयमोल सी एल, वि. अधिकारी

**प्रादेशिक कार्यालय नेडुमंगाड** में 30 सितंबर 2020 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री के जी जयकुमार, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह का उद्घाटन किया। श्रीमती बिंदुकला, हिंदी अध्यापिका, वितुरा स्कूल प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्रीमती उमादेवी सी एन, सहायक विकास अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

कार्यालय के कर्मचारियों ने बड़ी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता की। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

### I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

- प्रथम - श्रीमती शालिनी एस नायर, क.सहायक  
द्वितीय - श्रीमती उमादेवी सी एन, स.वि.अधिकारी  
तृतीय - श्री जीजू राज वी एन, प्रक्षेत्र सहायक



### II. कवितापाठ

- प्रथम - श्री सुरेश बाबु, प्रबंध निदेशक, अनंतपुरी रबर्स  
द्वितीय - श्रीमती शालिनी एस नायर, क.सहायक  
तृतीय - श्रीमती श्रीरंजिनीदेवी पिल्लै, स.वि. अधिकारी

### III. भाषण

- प्रथम - श्रीमती श्रीरंजिनीदेवी पिल्लै, स.वि. अधिकारी  
द्वितीय - श्री प्रवीण एस बैजु, क.सहायक ग्रेड I  
तृतीय - श्रीमती उमादेवी सी एन, स.वि.अधिकारी





## चिकित्सा : शरीर विज्ञान नोबेल पुरस्कार

### बारुज बेनासिराफ

पुरस्कार वर्ष : 1980  
जन्म : 29 अक्तूबर, 1920  
मृत्यु : 2 अगस्त, 2011  
राष्ट्रीयता : अमरीकी

बारुज बेनासिराफ को ज्यां दासेट तथा जार्ज डी स्नेल के साथ 1980 का नोबेल पुरस्कार दिया गया। इन्होंने रोग प्रतिरोधक प्रणाली के हानिकारक द्रव्यों के प्रति आकर्षण पर आनुवंशिक नियंत्रण के संबंध में अनुसंधान किया।

### ज्यां दासेट

पुरस्कार वर्ष : 1980  
जन्म : 19 अक्तूबर 1916  
मृत्यु : 6 जून 2009  
राष्ट्रीयता : फ्रेंच

ज्यां दासेट ने अन्य दो व्यक्तियों के साथ 1980 का नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया। इन्होंने ह्यूमन लूकासिट्स एण्टिजन एच एल ए को नियंत्रित करने वाले जीनों का पता लगाया।

### जार्ज डी स्नेल

पुरस्कार वर्ष : 1980  
जन्म : 19 दिसंबर 1903  
मृत्यु : 06 जून 1996  
राष्ट्रीयता : अमरीकी

इन्होंने आनुवंशिकता को सुनिश्चित करने वाले कोशिका के उस भाग का पता लगाया जो रोग प्रतिरोधक प्रतिक्रिया को नियमित करता है। इन्हें बारुज बेनासिराफ तथा ज्यां दासेट के साथ भागीदार के रूप में पुरस्कार मिला।

### रोजर डब्ल्यू स्पेरी

पुरस्कार वर्ष : 1981  
जन्म : 20 अगस्त, 1913  
मृत्यु : 17 अप्रैल 1994  
राष्ट्रीयता : अमरीकी

इन्होंने इस बात का पता लगाया कि प्रमस्तिष्क का आधा वृत्त कैसे काम करता है। इन्होंने इस बाता का खण्डन किया कि मस्तिष्क का विशिष्ट आधा भाग दूसरे आधे भाग से अधिक प्रभुत्व वाला है या दूसरे से अधिक महत्व का है। इसीलिए इन्हें पुरस्कृत किया गया।

### डेविड एच हुबल

पुरस्कार वर्ष : 1981  
जन्म : 27 फरवरी 1926  
मृत्यु : 22 सितंबर, 2013  
राष्ट्रीयता : अमरीकी

इन्होंने यह दर्शाने का महत्वपूर्ण कार्य किया कि मनुष्य कैसे सोचता है और अपनी आंखों से प्राप्त वातावरण के द्वारा सूचना या जानकारी को कैसे संसाधित करता है। इसीलिए इन्हें पुरस्कार प्राप्त हुआ।

### टॉस्टन एन वीज़ल

पुरस्कार वर्ष : 1981  
जन्म : 03 जून, 1924  
राष्ट्रीयता : स्वीडिश

इन्होंने आंखों द्वारा प्राप्त जानकारी को मस्तिष्क द्वारा संसाधित करने की क्रिया का विवरण उपस्थित किया। इन्हें डेविड एच हुबल और रोजर स्पेरी के साथ नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ।





कोरोना वैक्सीन  
सभी के लिए है,

अपनी बारी का धैर्यपूर्वक  
प्रतीक्षा करें



जरूर जानें, कोविड-19  
टीकाकरण से जुड़े  
ये महत्वपूर्ण तथ्य

